बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

सत्र: 2024-25

(कक्षा - 10)

संस्कृत

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय - संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

बजरंग लाल

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा

संभागीय कॉर्डिनेटर, शेखावाटी मिशन 100
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

संकलनकर्त्ता टीम : संस्कृत

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन 100

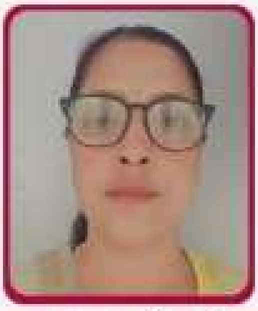

सुशीला चौधरी

रा.उ.मा.वि. -खिलेरिया,सरदारशहर,
(चूरू)

संदीप शर्मा

रा.उ.मा.वि. -कल्याणमाली
नेछवा (सीकर)

सुरेश कुमार मीणा

रा.उ.मा.वि. -रामसिंहपुरा
नेछवा (सीकर)

ममता बिजारणियां

रा.उ.मा.वि. -बौसाना
धोद (सीकर)

भूपेंद्र गौतम

रा.उ.मा.वि. -जोरावर नगर
श्रीमाधोपुर (सीकर)

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

प्रश्नपत्र–योजना

कक्षा- दशमी (माध्यमिकः)

विषयः-संस्कृतम् (तृतीयभाषा)

अवधिः-3 घण्टे 15 मिनट (सपादहोरात्रयम्) **पूर्णांका: - 80**

1. उद्देश्यानाम् अंकभारः –

क्र.सं.	उद्देश्यम्	अंकभारः	प्रतिशतम्
1.	ज्ञानम्	26	32.50%
2	अवबोधः	28	35.00%
3.	ज्ञानोपयोगः	15	18.75%
4	कौशलम्	05	6.25%
5	विश्लेषणम्	06	7.50%
योगः		80	100%

2. प्रश्नानां प्रकारानुसारम् अंकभारः–

क्र. सं.	प्रश्नानां प्रकाराः	प्रश्नानां संख्याः	प्रतिप्रश्नम् अंकाः	कुलाकाः	प्रतिशतम् अंकानाम्	प्रश्नानां प्रतिशतम्	सम्भावितः समयः
1.	बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः	1	1	17	21.25%	31.48%	25 निमेषाः
2	रिक्तस्थानम्	1	1	05	6.25%	9.26%	15 निमेषाः
3	अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नाः	4	1	15	18.75%	27.79%	40निमेषाः
4	लघूत्तरात्मकप्रश्नाः	7	2	22	27.50%	20.37%	32निमेषाः
5	दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः	3	3	9	11.25%	5.55%	33निमेषाः
6	निबन्धात्मकप्रश्नाः	3	4	12	15.00%	5.55%	50निमेषाः
योगः		19		80	100	100%	195 निमेषाः

3. विषयवस्तूनाम् अंकभारः –

क्र. सं.	विषयवस्तु	अंकभारः	प्रतिप्रश्नम् अंकाः
1.	अपठितावबोधनम्	08	10.00%
2	रचनात्मककार्यम्	15	15.00%
3	अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	25	30.00%
4	पठितावबोधनम्	32	40.00%
योगः		80	100

BSER

प्रश्न-पत्रस्य नीलपत्रम् (ब्ल्यू प्रिन्ट)

कक्षा- माध्यमिकः कक्षा-दशमी   विषयः - संस्कृतम्   पूर्णांकाः – 80 अङ्काः

क्र. सं.	उद्देश्यविधाः/उपविधाः	ज्ञानम्						अवबोधः						ज्ञानोपयोगः / अभिव्यक्तिः						कौशलम्/मौलिकता						विश्लेषणम्						योगः
		बहुविकल्प.प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति.लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प.प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति.लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प.प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति.लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प.प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति.लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प.प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति.लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	
1.	अपठित–अवबोधनम्									3(1)	2(-)					3(-)																8(1)
2.	रचनात्मककार्यम्					1(1)						1(-)	3(1)					1(-)					1(-)	1(-)	1(-)				2(1)		4(1)	15(4)
3.	अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	10(1)	3 (1)		2(1)	3(1)			2(-)		2(1)							3(1)														25(6)
4.	पठित-अवबोधनम्	7(-)								9(3)	6(3)						8(1)						2(1)									32(8)
	योगः	17(1)	3(1)		2(1)	4(2)			2(-)	12(4)	10(4)	1(-)	3(1)			3(-)	8(1)	4(1)					3(1)	1 (-)	1(-)				2(1)		4(1)	80(19)
	सर्वयोगः	26(5)						28(9)						15(2)						5(1)						6(2)						80(19)

विकल्पयोजना :- खण्ड–स–द–योः” प्रत्येकम् एकः प्रश्नः आन्तरिकविकल्पात्मकः अस्ति ।   अवधेयम् – कोष्ठकात् बहिः संख्या अंकबोधिका आन्तरिकसंख्या च प्रश्नबोधिका ।

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

सत्र: 2024-25

विभिन्न विषयों की नवीनतम PDF डाउनलोड करने हेतु QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

SHEKHAWATI MISSION-100 : 2024-25

बहुविकल्पात्मक प्रश्नाः

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः–

प्र:1 'शुचिपर्यावरणम् इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संकलितः २

(अ) लसल्लतिकातः (ब) सामवेद संहितातः (स) चरकसंहितातः (द) ऋग्वेदसंहितातः (अ)

प्र:2 'शुचिपर्यावरणम्' इति पाठरस्य लेखकः कः?

(अ) हरिदत शर्मा (ब) महावीरप्रसादः (स) नवलकिशोरः (द) कलानाथः (अ)

प्र:3 केषां माला रमणीया?

(अ) ललितलतानाम् (ब) पुष्पाणाम् (स) मौक्तिकानाम् (द) रूप्यकाणाम् (अ)

प्र:4 अत्र जीवितं कीदृशं जातम् ?

(अ) सरलम् (ब) सुखदम् (स) उन्नतम् (द) दुर्वहम् (द)

प्र:5 मनः शोषयत् तनुः पेषयत् किम् भ्रमति?

(अ) पृथ्वी (ब) सूर्यः (स) कालायसचक्रम् (द) चन्द्रमा (स)

प्र:6 का रसालं मिलिता?

(अ) कुसुमावलिः (ब) भ्रमरपंक्ति (स) नवमालिका (द) चटका (स)

प्र:7 मनुष्याणां शरीरस्यः महान् रिपुः कः?

(अ) आलस्यम् (ब) बलम् (स) स्फूर्तिः (द) श्रमः (अ)

प्र:8 उद्यमेन समः किं नास्ति?

(अ) धनम् (ब) शत्रुः (स) बन्धुः (द) रुपम् (स)

प्र:9 गुणी किं वेति?

(अ) गुणं (ब) निर्बल (स) निर्गुणो (द) वायसः (अ)

प्र:10 कः न परितोषणीय?

(अ) धनवान् (ब) मत्तः (स) क्रुद्धः (द) अकारण द्वेषि (द)

प्र:11 कः सम्पत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति?

(अ) विदुषाम् (ब) महताम् (स) धनिकानां (द) सज्जनानाम् (ब)

प्र:12 पिककाकयोंः भेदः कदा दृश्यते?

(अ) वसन्तसमये (ब) रात्रौ (स) ग्रीष्मकाले (द) वर्षाकाले (अ)

प्र:13 'तिरुस्कुरलं' इति ग्रन्थः मूलतः कस्यां भाषायां रचितः?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) आग्लभाषायां (ब) तमिलभाषायां (स) संस्कृतभाषायां (द) उर्दू भाषयां (ब)

प्र:14 मूर्खः कीदृशं फलम् भुक्ते?

(अ) अपक्वम् (ब) मधुरम् (स) पक्वम् (द) कठोरम् (अ)

प्र:15 लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः के प्रकीर्तिताः?

(अ) विद्वांसः (ब) नृपाः (स) धनिका (द) नराणां (अ)

प्र:16 पित्ता पुत्राय बाल्ये ददाति –

(अ) धनम् (ब) सहयोगम् (स) विद्याधनम् (द) परामर्शम् (स)

प्र:17 प्राणेभ्योऽपि विशेषतः कः रक्षणीयः?

(अ) सदाचारः (ब) प्राणः (स) धनम् (द) विद्याधनम् (अ)

प्र:18 वाक्पटुः मंत्री कैः न परिभूयते?

(अ) मित्रैः (ब) परैः (स) मूर्खैः (द) न कोऽपि (ब)

प्र:19 सरसः शोभा भवेत्?

(अ) हंसैः (ब) कमलैः (स) राजहंसेनः (द) खगैः (स)

प्र:20 चातकः कम् याचते–

(अ) मेघान् (ब) पुरन्दरम् (स) देवान् (द) नक्षत्रान् (अ)

प्र:21 अम्भोदाः कुत्र सन्ति?

(अ) गगने (ब) वने (स) वसुधां (द) तरोः (अ)

प्र:22 रसालमुकुलानि के समाश्रयन्ते ?

(अ) भृङ्.गा (ब) पतग्ङ़ा (स) चातक (द) मीनः (अ)

प्र:23 कीदृशं वचः मा ब्रूहिः?

(अ) दीनं (ब) विद्वास् (स) शत्रु (द) सज्जनानाम् (अ)

प्र:24 वने कः वसति?

(अ) खगः (ब) चातकः (स) अश्वः (द) सिंहः (ब)

प्र:25 विमूढधीः कीदृशः वाच परित्यजति?

(अ) अधर्मप्रदाम् (ब) परूषाम् (स) कठोरम् (द) सुकोमलम् (ब)

प्र:26 अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रजः कः?

(अ) काकः (ब) मयूरः (स) वानरः (द) बकः (द)

प्र:27 पिता कस्य रुग्णानामाकर्ण्य व्याकुलो जातः ?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) पितामहस्य (ब) तनूजस्य (स) न्यायधीशस्य (ड) आरक्षीजनस्य (ब)

प्र:28 'जननी तुन्यवत्सला' इति पाठः मूलतः कस्मात् ग्रन्थाद उद्धृतः ?

(अ) रामायणात् (ब) रघुवंशात् (स) कादम्बार्या (द) महाभारतात् (द)

प्र:29 वस्तुतः चौरः कः आसीत् ?

(अ) आरक्षी (ब) बालेयाति (स) गृही (द) न्यायाधीशः (अ)

प्र:30 समग्रविश्वैः कैः आतंकितः दृश्यते?

(अ) शस्त्रः (ब) धनिकै (स) असुरै (द) भूकम्पै (द)

प्र:31 लवकुशयोः वंशस्य कर्ता कः?

(अ) वशिष्ठः (ब) हरिश्चन्द्र (स) चन्द्रः (द) सूर्य (द)

प्र:32 वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति ?

(अ) पुत्रः (ब) पिता (स) शिशुजनः (द) मित्रम् (स)

प्र:33 कस्य समक्षमद्यपि मानवः वामनकल्प एव?

(अ) भूकम्पस्य (ब) समुद्रस्य (स) भगवतः (द) प्रकृतेः (द)

प्र:34 बुद्धिमती गहनकानने के ददर्श ?

(अ) सिंहम् (ब) चौरम् (स) वानरम् (द) व्याघ्रम् (द)

प्र:35 कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?

(अ) काकः (ब) पिकः (स) मयूरः (द) बकः (अ)

प्र:36 वानरः कस्य पुच्छं धुनोति?

(अ) पिकस्य (ब) काकस्य (स) सिहंस्य (द) मयूरस्य (स)

प्र:37 कृशकायः कः आसीत्?

(अ) न्यायाधीशः (ब) आरक्षी (स) अभियुक्तः (द) रक्षापुरूषः (स)

प्र:38 गुर्जरराज्ये कदा भूकम्पविभीषिका समुत्पन्ना ?

(अ) 2000 ई. वर्षे (ब) 2001 ई. वर्षे (स) 2005 ई. वर्षे (द) 2010 ई. वर्षे (ब)

प्र:39 राजपुत्रस्य किन्नाम आसीत् ?

(अ) मानसिंहः (ब) देवसिंहः (स) राजसिंहः (द) अमरसिंहः (स)

प्र:40 वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?

(अ) नृपपुत्रः (ब) शिशुजनः (अ) पिता (द) मित्रम् (ब)

प्र:41 'बुद्धिर्बलवती सदा' इति पाठः कस्मात ग्रन्थात् संकलितः?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) काकल्याः (ब) कथा (स) शुकसप्ततेः (द) लसल्लतिकायाः (स)

प्रः42 वृषभः कुत्र पपात?

(अ) भूमौ (ब) आकाशे (स) जले (द) न कुत्रापि (अ)

प्रः43 लोके महतो भयात् कः मुच्यते ?

(अ) धनिकः (ब) बलवान् (स) धूर्तः (द) बुद्धिमान् (द)

प्रः44 किं कृत्वा मनुष्यः नावसीदति ?

(अ) युद्धम (ब) धनार्जम (स) तपः (द) उद्यमं (द)

प्रः45 के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(अ) जनाः (ब) वानराः (स) ताराः (द) पतंगाः (द)

प्रः46 प्रजासुखे कस्य सुखम् ?

(अ) राज्ञः (ब) मित्रस्य (स) पितुः (द) मातुः (अ)

प्रः47 सरसः शोभा केन भवति ?

(अ) बकेन (ब) गजेन (स) मकरेण (द) राजहंसेन (द)

प्रः48 'विचित्रः साक्षी' इति पाठः केन विरचतिः?

(अ) ओमप्रकाश ठाकुरेण (ब) हरिदत्तशर्मण (स) सुश्रुतेन (द) कालिदत्सेनं (द)

प्रः49 दुर्बलः वृषभः कुत्र पपात् ?

(अ) वने (ब) गृहे (स) ग्राम (द) क्षेत्रे (द)

शेखावाटी मिशन–100

पाठ– 2 शुचिपर्यावरणम् श्लोको का भावार्थ

प्रः1 कज्जलमलिनं धुमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।

वाष्पयानमाला सन्धावति वितरन्ती ध्वानम्।।

यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः, कठिनं संसरणम्।

शुचि............... ।।1।।

प्रसंगः–

यह पद्यांश हमारी 'शेमुषी' पाठ्यपुस्तक के 'शुचि पर्यावरणम्' पाठ से लिया गया है। यह पाठ प्रो. हरिदत्त शर्मा रचित 'लसल्लतिका' गीति–संग्रह से संकलित है।

भावार्थः–

सैकड़ो मोटरगाडियाँ काजल–सा मलिन धुआँ अर्थात् काला–काला धुआँ छोड़ती है। शोर करती हुई रेलगाड़ियों

की पंक्तिः निरन्तर दौड़ रही है। वाहनों की पंक्तियाँ असीमित (अन्त न होने वाली) हैं इसलिए (रास्ते में) चलना भी दूभर हो गया है। अतः शुद्ध पर्यावरण की शरण में चलना चाहिए।

प्र:2 प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा ।।
मानवाय जीवनं कामये को जीवन्मरणम्।
शुचि.............. ।।2।।

प्रसंग–

यह पद्यांश हमारी 'शेमुषी' पाठ्य पुस्तक के 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ से लिया गया है। यह पाठ प्रो. हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित 'लसल्लतिका' गीत–संग्रह से संकलित है। इस पाठ में कवि भारतीय संरक्षण के आधार पर कहता है।

भावार्थः–

लता, वृक्ष और झाड़ियाँ पत्थरों केतल पर नष्ट नहीं होनी चाहिए। अर्थात् पाषाणकालीन सभ्यता प्रकृति में समाविष्ट नहीं होनी चाहिए। मैं मानव के जीवन की कामना करता हूँ, जीवन के नष्ट होने की नहीं। अतः शुद्ध पर्यावरण की शरण में जाना चाहिए।

प्र:3 सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति, छाया केन निवार्यते ।।3।।

प्रसंगः–

यह श्लोक हमारी 'शेमुषी' पाठ्यपुस्तक के 'सुभाषितानि' पाठ से लिया गया है यह श्लोक भर्तृहरि के नीति शतक से संकलित है। इस श्लोक में कवि महावृक्ष के बहाने से कहता है। कि मनुष्य को महापुरूष की सेवा करनी चाहिए क्योंकि वह हित ही करता है।

भावार्थः–

फलों और छाया से युक्त विशाल पेड़ का ही आश्रय लेना चाहिए, भाग्य से यदि फल (परिणाम) न मिले तो छाया को कौन रोक सकता है। अर्थात् छाया तो मिलती ही है।

प्र:4 विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम्।
अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ।।4।।

प्रसंग–

शेखावाटी मिशन–100

यह श्लोक हमारी 'शेमुषी' पाठ्यपुस्तक के 'सुभाषितानि' पाठ से लिया गया है यह श्लोक भर्तृहरि के नीति शतक से संकलित है। इस श्लोक में कवि कहता है कि इस संसार में कुछ भी निरर्थक नहीं है।

भावार्थः–

इस अद्भुत संसार में निश्चित ही कुछ भी अनुपयोगी नहीं है। घोड़ा यदि दौडने की कला में कुशल (योग्य) है। तो गधा भार ढोने में योग्य होता है।.

प्र:5 विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।

अन्वेषां वदने ये तु चक्षुर्नामनी मते ।।5।।

प्रसंग–

यह श्लोक हमारी 'शेमुषी' पाठयपुस्तक के 'सूक्तयः' पाठ से लिया गया है। यह पाठ मूलतः कवि तिरुवल्लुवर कृत्त 'तिरक्कुरल' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है इस पद्य में कवि ने विद्वानों को ही नेत्रों वाला बताया गया है।

भावार्थः–

विद्वान लोगो को ही इस लोक में आँखों वाला कहा गया है। अन्य के मुख (आनन) पर जो आँखे होती है। वे तो नाम की आँखे मानी गई है।

प्र:6 एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।

न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ।।6।।

प्रसंगः–

यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमूषी' के 'अन्योक्तय': पाठ से लिया गया है। यह श्लोक पण्डितराज जगन्नाथ कृत 'भामिनी विलास' ग्रन्थ से संकलित है। इस श्लोक में कवि सज्जन–दुर्जन का भेद वर्णन करते है।

भावार्थः–

एक (ही) हंस में तालाब की जो शोभा होनी चाहिए चारों और किनारे पर रहने वाले हजारों बगुलों से वह शोभा नहीं होती।

पठित पद्यांश प्रश्नउत्तराणि

प्र:1 अधोलिखित श्लोकं पठित्वा एतादाधारित प्रश्नानम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।

(1) दुर्वहमत्र जीवितं जात प्रकृतिरेव शरणम्।

शुचि–पर्यावरणम् ।।

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।।

मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम ।।

दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम् ।।

शुचि .... ।। 1 ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) कुत्र दुर्वह्म जीवितम्? उत्तर– लोके या (संसारः) या जगत्

(ii) अनिशं किं चलति? उत्तर– कालायसचक्रम

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) अत्र जीवितं कीदृशं जातम्? उत्तर– अत्र जीवित दुर्वहं जातम्।

(ii) कालायसचक्रं किं किं करोति? उत्तर–कालायसचक्रं, मनुः शोषयत, तनुः पेषयत् सदा वक्रम भ्रमति।

(ग) भाषिक कार्यम्

(i) दशनैः इति पदस्य विशेषणं लिखत। उत्तर– दुर्दान्तैः

(ii) 'भ्रमति सदा वक्रम्' अत किं क्रियापदम्? उत्तर– चलत्

2. अयि चल बन्धोः खगकुलकलरव गुञ्तिवनदेशम्।
पुर–कलरव सम्भमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम् ।।
चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्।

शुचि................. ।। 2 ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) वनदेशं केन गुञ्जितम्? उत्तर– खगकुलकलरवेण।

(ii) अत्र केभ्यः सुख सन्देशम् ? उत्तर– जनेभ्यः सुख सन्देश धृत,

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कविः कीदृशं देशं गन्तुम् इच्छति? उत्तर– कविः खगकुलकलरव––गुञ्चितवनदेश चलितु।

(ii) कि जीवतरसहरणम्? उत्तर– पुर–कलरवेण सम्भ्रमितजनेभ्यो च सुखसंदेशं धृतम।

(ग) भाविक कार्यम–

(i) 'अयि चल बन्धो' अत्र किं क्रियापदम् ? उत्तर– चल

(ii) 'वनदेशम्' इति पदस्य विशेषणपदं लिखत? उत्तर– गुम्जित

शेखावाटी मिशन–100

3. गुणी गुणी वेत्ति न वेत्ति निर्गुणणो,

बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।

पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः

करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।

प्रश्नाः–

(क) एक पदेन उत्तरत –

(i) कः गुणं वेत्ति? उत्तर– गुणी

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) गजः कस्य बलं जानाति? उत्तर–गजः सिंहस्य बलं।

(ii) निर्बलः च किं न जानाति? उत्तर– निर्बलः च बलं न जानाति ।

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) 'गुणी' इति कृर्तपदस्य क्रियापद किम ? उत्तर– वेत्ति

(ii) 'गुण वेति' इत्यत्र 'वेत्ति' क्रियाया कर्तृपदं श्लोके किम अस्ति? उत्तर– गुणी

4. **भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता–**

न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानी।

रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,

कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उतरत–

(i) राजहंसेन काने निपीतानि? उतर– अम्बूनि

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) राजहंसेन सरोवरस्य का भुक्ता? उत्तर– राजहंसेन सरोवरस्य मृगालपटली भुक्ता

(ii) सःकस्य कृतोपकारकः भवति ? उत्तर– सः सरोवरस्य कृतोपकारकः भवति।

(ग) भाषिक कार्यम् –

(i) 'निपीतानि' इति क्रियापदस्य अन्वयः केन पदेन सह वर्तते। उत्तर– अम्बूनि

(ii) 'भवता' इति सर्वनामपदस्याने संज्ञा पदं लिखत? उत्तर– राजहंसेन

5. रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता–

शेखावाटी मिशन–100

मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।

केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कविः मित्रम्' इति शब्देन के सम्बोधयति? उत्तर– ग्रामान्ते

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) गगने सर्वे मेघाः कीदृशाः न सन्ति? उत्तर– कविः एकान्ते कान्तारे सञ्चरणं कर्तुमिच्छति

(ii) कस्य पुरतः दीनं वचः न ब्रूयात् ? उत्तर– यं यं पश्यसि तस्य पुरतः दीनं वचः सा ब्रूहि।

(ग) भाषिक कार्यम् –

(i) 'सन्ति' इति क्रियापदस्य पधांश कर्तपदं किम् ? उत्तर– कवये

(ii) 'वचः' इति विशेष्यपदस्य पधांश विशेषणपदं किम्? उत्तर– कान्तारे

6. **निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति, ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति।**

अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै, कथं जनस्तं परितोषयिष्यति।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) मनुष्यः किम् उद्दिश्य प्रकुप्यति? उत्तर–निमित्तम

(ii) प्रकोपे अपगमे मनुष्यः किं अनुभवति ? उत्तर– ध्रुवम् प्रसीदति

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) मनुष्यः कदा प्रसीदति? उत्तर– सः तस्य अपगमे ध्रुवं प्रसीदति।

(ii) अकारणद्वेषि, मनुष्यः किं न अनुभवति? उत्तर– अकारणद्वेषि, मनुष्यः तं जनः कथं परितोषतियिष्यति।

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) 'कारणम्' इत्यिर्थे श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्? उत्तर– अकारणद्वेषि

(ii) 'प्रक्रुप्यति' क्रियापदस्य कर्ता का उत्तर–मनुष्यः

श्लोक **मृगा मृगैः सग्ङमनुब्रजन्ति,**

गावश्च गोभिः तुरगास्तुरगैङ्ः।

मुर्खाश्च मूर्खौ सुधियः सुधीभिः,

शेखावाटी मिशन–100

समान–शील–व्यसनेषुसख्यम् ।।

प्रश्न– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) मृगाः केः सङ्गमनुब्रजन्ति? उत्तर– मृगैः।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) सख्यं केषु भवति? उत्तर– संख्यं समान–शील–व्यसनेषु भवति।

(ii) मूर्खाः कैः सङ्गम अनुगछन्ति? उत्तर– मूर्खाः च मूखैः सह अनुगछन्ति।

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) 'मृगाः' इति कर्तृपदस्य श्लोके क्रियापदं किम्? उत्तर–अनुव्रजान्ति

(ii) '.................... मूर्खौः सगड्मनुव्रजन्ति। अत्र उचिनं कर्तृपदं किम्? उत्तर– मूर्खाः

1. **आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गाः,**
भृङ्गा रसालमुकु – लानि समाश्रयन्ते।
सकोणचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो,
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु ।।

प्रश्न–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) सङ्कुचिते सरोवरे परितः अम्बरपथं कः आपेदिरे?

(ii) रसालमुकुटानि के समाश्रयन्ते?

उत्तर–

(क) (i) पक्षी (ख) (ii) भृड़गा

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) सरोवरे सड्कुचिते भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते?

(ii) सङ्कुचिते सरोवरे पतङ्गा कुत्र आपेदिरे ?

उत्तर–

(i) सरोवरे सक्डुचिते भृड़गाः, रसालमुकुलानि समाश्रथन्ते।

(ii) सक्ड़चिते सरोवरे पतङ्गा अम्बरपथं आपेदिरे।

(ग) भाषिक कार्यम–

(i) 'आपेदिरे' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्ता कः। उत्तर– पतड़गा

(ii) 'सरस्त्वयि' अत्र 'त्वयि' सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम ? उत्तर–सरः

अद्योलिखित गद्यांश पठित्वा एतद आधारित पश्नाम् उतराणि यथा निर्देशन लिखत–

1. इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छ भुकप्पस्य। पञ्चोत्तर –द्विसहस्त्रखीष्टाब्दे (2005 ईस्वीये वर्ष) अपि कश्मीरप्रान्ते पाकिस्तानदेशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मात्कारणात् लक्षपरिमिताः जनाः अकालकालकवलिताः। पृथ्वी कस्माव्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत पृथिव्या अन्तर्गभे विद्यामानाः बृहत्यः पाषाण–शिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनञ्च। तदैव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत

(i) इयं कस्य भैरवविभीषिका आसीत्?

उत्तरम् = कच्छभूकम्पस्य।

(ii) कस्मिन् वर्षे पाकिस्तानदेशे भूकम्पनं जातम्?

उत्तरम् = 2005 ई. वर्षे।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) पृथिव्याः अन्तर्गर्भे का विघमानाः सन्ति?

उत्तरम् = पृथिव्याः अन्तर्गर्भे बृहत्यः पाषाणशिलाः विद्यमानाः सन्ति।

(ii) धरायाः महाकम्पनेन किम् समुत्पद्यते?

उत्तरम् = धरायाः महाकम्पनेन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम

(i) 'पाषाणशिला' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किम्?

उत्तरम् = बृहत्यः।

(ii) 'कथयन्ति' इति क्रियायाः गद्यांशे कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तरम् = वैज्ञानिकाः।

2. विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तर प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धो चौर शङ्क्या तमन्वधावत् अगृहणाच्च, परं विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत ''चौरोऽयं चौरोऽयम्'' इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद, निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्या आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याव्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कीदृशी दैवगतिः?

उत्तरम् = विचित्रा।

(ii) ग्रामवासिनः कम् चौरं मत्वाऽभर्त्सयन?

उत्तरम् = अतिथिम्।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) चौरः उच्चैः क्रोशितुं किम् आरभत?

उत्तरम् = चौरः उच्चैः क्रोशितुम् आरभत– ''चौरोऽयम् चौरोऽयम्'' इति।

(ii) रक्षापुरुषः अतिथिं किम प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्?

उत्तरम् = रक्षापुरुषः अतिथिं 'चौरोऽयम्' इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम्–

(i) ''विचित्रा दैवगतिः'' अत्र विशेषपदं लिखत।

उत्तरम् = विचित्रा।

(ii) ''ग्रामवासिनः स्वगृहात् निष्क्रम्य तत्रागच्छन्'' अत्र 'आगच्छन्' इति क्रियापदस्थ कर्तृपदं लिखत।

उत्तरम् = ग्रामवासिनः।

3. कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वितुमपार्जितवान्। तेन स्वपुत्र एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः सम भूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।
पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आंसीत्। निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत्–

(i) निशान्धकारे प्रसृते कुत्र पदयात्रा न शुभावहा?

उत्तरम् = विजने प्रदेशे।

(ii) भूरि परिश्रम्य कः किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्?

उत्तरम् = निर्धनः जनः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) निर्धनः जनः किमर्थं व्याकुलो जातः?

उत्तरम् = निर्धनः जनः स्वपुत्रस्य रुग्णतामाकर्य व्याकुलो जातः।

(ii) निर्धनः जनः स्वपुत्रं कुत्र प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः?

उत्तरम् = निर्धनः जनः एकस्मिन् महाविद्यालये स्वपुत्रं प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः।

प्रश्नाः– भाषिककार्यम्–

(i) ''तेन स्वपुत्रं एकस्मिन्................''. अत्र 'तेन' इति सर्वनाम स्थाने संज्ञापद प्रयोग कुरुत।

उत्तरम् = निर्धनजनेन।

(ii) ''स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।'' अत्र 'स' इति कर्तापदस्य क्रियापदं लिखत।

उत्तरम् = प्राचलत्।

4. आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादित देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभ्युिक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच– ''रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः– इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्नाः– एकपदेन उत्तरत–

(i) कः सुपुष्टदेह आसीत्?

उत्तरम् = आरक्षी।

(ii) कः अतीव कृशकायः आसीत?

उत्तरम् = अभियुक्तः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) तौ पटाच्छादित देहं स्कन्धेन वहन्तौ कं प्रति प्रस्थितौ?

उत्तरम् = तौ पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ।

(ii) चौर्याभियोगे सः किं लप्स्यते।

उत्तरम् = चौर्याभियोग सः वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यते।

प्रश्नाः– (ग) भाषिक कार्यम् –

(i) ''आदेशं प्राप्त उभौ प्राचलताम्'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत–

उत्तरम् = उभौ।

(ii) ''स्कन्धेन वहनं दुष्करम् आसीत।'' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

उत्तरम् = दुष्करम्।

5. कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलः वृषभ तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत। सः वृषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः।

शेखावाटी मिशन–100

तमुत्थापयितुं बहुवारम् यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कृषकः काभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्?

उत्तरम् = बलीवर्दाभ्यां।

(ii) क्रुद्धः कृषकः कम् उत्थापयितुं यत्नमकरोत्?

उत्तरम् = वृषभम्।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) बलीवर्दयोः एकः कीदृशः आसीत?

उत्तरम् = बलीवर्दयौः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्।

(ii) कृषकः कम तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत्?

उत्तरम् = कृषकः दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुधमानः अवर्तत।

प्रश्नाः– (ग) निर्देशानुसारम् उनरत –

(i) 'बलीवर्दयोः' इति संज्ञापदस्य गद्यांशे सर्वनामपदं किं प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = तयोः।

(ii) गद्यांश 'पपात' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

उत्तरम् = वृषभः।

6. भूमौ पतिते स्वपुत्र दृष्टवां सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत् – ''अयि शुभे! किमेवं रोदिषि? उच्यताम्'' इति। सा च विनिपातो न वः कश्चिद् दृश्यते त्रिदशाधिपः। अहं तु पुत्रं शोचामि, तेन रोदिमि कौशिक।।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) सर्वधेनूनां मातुः किन्नाम आसीत? उत्तरम् = सुरभिः।

(ii) सुरभिं कः अपृच्छत्? उत्तरम् = इन्द्रः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) किं दृष्टवा सुरभेः नेत्राभ्यामश्रुणि आविरासन्?

उत्तरम् = भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा सुरभैः नेत्राभ्यामश्रुणि आविरासन्।

(ii) सुराधिपः किं दृष्ट्वा सुरभिमपृच्छत्?

उत्तरम् = सुरभेरिमामवस्थां (रोदनं) दृष्ट्वा सुरधिपः तामपृच्छत्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम्–

(i) 'मातुः' इति विशेषण कस्य?

उत्तरम् = सुरभेः।

(ii) 'सुराधिपः तामपृच्छत्।' अत्र 'ताम्' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = सुरभ्ये।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विजये वम्तुमादिष्टयै। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघत् सः शवः प्रावारकम पसार्य न्यायाधीशम् भिवाध निवेदितवान–मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि सदुम्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं' चोरिताया मञ्जूषायाः ग्रहणाद वारिदः अतः निजकृत्यस्थ फलं भुङ्क्ष्वं। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रस्य कारादण्ड लप्स्यते इति। न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्ड मादिश्य तं जनं ससम्मान मुम्तवान्।

प्रश्न– (क) एक पदेन उत्तरत्–

(i) केन पुनस्तौ घटनायाः विषये वम्तुमादिष्टयै?

उत्तरम्– न्यायाधीशेन्।

(क) पूर्ण वाक्यन उतरम् –

(i) कि प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत्? तथा सर्वमवगम्य न्यायाधीशः कि कृतवान्?

उत्तरम्– आगक्षिणि निजपक्षं, प्रस्तुतवति, आश्चर्यमघटत्। तथा सर्वमवगंम्य मुक्तवान्।

(ग) भाषिक कार्यम–

(i) त्वयाऽहं चोरितायाः– 'अत्र' 'त्वया' इति सर्वनाम् पदं करमै प्रयुक्तम् ?

उत्तरम् – अभियुक्याय!

(ii) चोरितायाः मञ्जूषायाः – इत्यनयोः पढयो विशेषापदं किम्?

उत्तरम– मञ्जूषायाः

अधोलिखितं नाट्याशं पठित्वा एतदाधारित.....................................लिखत।

1. रामः – कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?

विदूषकः – किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?

लवः – भ्रातरावावां सोदर्यौ।

रामः – समरूपः शरीरसन्निविशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्?

लवः – आवां यमलौ।

रामः – सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?

लवः – आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि (कुशं निर्दिश्य) अर्योऽपि गुरुचरणवन्दनायाम्..............।

कुशः – अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रवयामि।

रामः – अहो! उदात्तरम्यः समुदाचारः।

किं – नामधेयो भवतोर्गुरुः

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) लवकुशयोः शरीरसन्निवेशः कीदृशः आसीत्? उत्तरम् = समरूपः।

(ii) कुशलवौ कीदृशौ भ्रातरौ आस्ताम्? उत्तरम् = यमलौ।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्चेन उतरत –

(i) कयोः एकमेव प्रतिवचनम् आसीत्? उत्तरम् = लवकुशयोः एकमेव प्रतिवचनम् आसीत।

(ii) लवकुशयोः समुदाचारः कीदृशः आसीत्? उत्तरम् = लवकुशयोः समुदाचारः उदात्तरम्यः आसीत्।

प्रश्नाः– निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(i) 'कथमस्मत्समानाभिजनौ' इत्यत्र 'अस्मत्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = रामाय।

(ii) 'समुदाचारः इत्यस्य विशेषणपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

उत्तरम् = उदात्तरम्यः।

2. लवः – ननु भगवान् वाल्मीकिः। रामः – केन सम्बन्धेन?

लवः – उपनयनोपदेशेन।

रामः – अहमत्रभवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।

लवः – न हि जानांम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति

रामः – अहो माहात्म्यम्। कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।

रामः – कथ्यताम्। कुशः – निरनुक्रोशो नाम..............

रामः – व्यस्य, अपूर्व खलु नामधेयम्।

विदूषकः – (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति?

कुशः – अम्बा। विदूषकः – किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?

कुशः – यद्योवयोर्बालभावजनितं कञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपतिनिरनुक्रोशस्थ पुत्रौ, मा चापलम् इति।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कुशलवयोः गुरोः किन्नाम? उत्तरम् = वाल्मीकिः।

(ii) लवः कस्य नामधेयं न जानाति? उत्तरम् = स्वस्य जनकस्य।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्यन उत्तरत –

(i) कुशः स्वस्य पितुः किन्नाम कथयति?

उत्तरम् = कुशः स्वस्य पितुः नाम 'निरनुक्रोशः' इति कथयति।

(ii) तपोवने कश्चिद्धपि कस्य नाम न व्यवहरति?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम् = तपोवने कश्चिदपि लवकुशयोः पितुः नाम न व्यवहरति।

प्रश्नाः– (ग) निर्देषानुसारम् उत्तरत–

(i) 'जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' – अत्र 'अहम्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = कुशाय।

(ii) 'न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम' इत्यत्र 'अस्मिन' विशेष्यपदस्य विशेष्यपदं किम्?

उत्तरम् = तपोवने।

3. विदूषकः – (जनान्तिकम्) अहं पुनः पृच्छामि। (प्रकाशम्) किं नामधेया युवयोर्जननी?

लवः – तस्याः द्वे नामनी। विदूषकः – कथमिव।

लवः – तपोवनवासिनो देववीति नाम्नाह्वयन्ति, भगवान वाल्मीकिर्वधूरिति।

रामः – अपि च इतस्तावद् वयस्य!

मुहूर्त्मात्रम्।

विदूषकः – (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।

रामः – अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः?

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) कस्याः द्वे नामनी? उत्तरम् = सीतायाः/लवस्य मातुः।

(ii) सीतां वधूरिति नाम्ना कः आह्वयति? उत्तरम् = भगवान् वाल्मीकिः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) लवकुशयोः जननीं के देवीति नाम्नाह्वयन्ति?

उत्तरम् = लवकुशयोः जननी तपोवनवासिनः देवीति नाम्नाह्वयन्ति।

(i) केषां सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृतान्तः? उत्तर– लवकुशयोः रामस्य च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृतान्तः।

प्रश्न–(ग) भाषिककार्यम्

(i) 'अहं पुनः पृच्छामि।' अस्मिन् वाक्ये 'अहम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्। उत्तरम–विदूषकाय।

(ii) नाट्यांशे 'आह्वयन्ति' इति क्रियायाः कर्त्तृपदं किम्? उतरम् – तपोवनवासिन

4. **प्रकृतिमाता–** अहं प्रकृतिः युष्माकं सर्वेषां जननी? यूयं सर्वे एव में प्रियाः। सर्वेषामेव मत्कृते महत्वं विद्यते याथासमयम् न तावत् कलहेन समय वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एवं मोदव समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मादध्वं जीवनं च जीवनं च रसमय – कुरुध्वम्। तषथा कथितम्–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।

नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्।।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) केन समय वृथा न यापयन्तु? उत्तरम्–कलहेन।

(i) जीवन कीदृशं कुरुध्वम्? उत्तरम् –रसमयम्

प्रश्नाः–(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) का सर्वेषां वन्य जीवानां जननी वर्तते? उत्तरम्–प्रकृतिमाता सर्वेषां वन्य जीवनां वर्तर्त।

(ii) किं राज्ञः हितम् नास्ति किञ्च हितम्?

उत्तरम्– आत्मप्रियं राज्ञः हितम नास्ति् प्रजानां प्रियं तु राज्ञः हितम्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम् –

(i) 'युष्माकम् सर्वेषां' – इत्यत्र विशेष्यपदं किम्? उत्तरम् = युष्माकम्।

(ii) 'मे प्रियाः' इत्यन्त्र 'मे' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्? उत्तरम् = प्रकृतिमात्रे।

'जननी तुल्यवत्सला' इति कथायाः/ पाठस्य सारः हिन्दीभाषायां लिखत।

→ प्रस्तुत पाठ 'जननी तुल्यवत्सला' में वर्णित कथा महाभारत के वनपर्व से ली गई है। यह कथा सभी प्राणियों में समदृष्टि की भावना जगाती है। कथा के अनुसार कोई किसान दो बैलों से खेत की जुताई कर रहा था। उन दोनों बैलों में से एफ शरीर से दुर्बल तथा तेज से चलने मे असमर्थ था। अतः किसाान उस दुर्बल बैल को अत्यधिक कष्ट देता था। वह बैल हल उठाकर चलने मे असमर्थ होकर खेत में गिर पड़ा। भूमि पर गिरे हुए अपने पुत्र (बैल) को देखकर गोमाता सुरभि की आँखो में आसूँ आने लगे। सुरभि को राता हुआ देखकर देवराज इन्द्र ने इसका कारण पुछा–

सुरभि ने इन्द्र से कहा कि ''हे इन्द्र। मैं अपने पुत्र (बैल) की दीनता को देखकर रो रही हूँ। वह दीन है, ऐसा जानकर भी किसान अत्यधिक प्रताड़ित करता है। इन्द्र ने कहा कि तुम्हारे तो हजारों पुत्र है, फिर इसी पर इतना प्रेम क्यों है? क्योंकि यह अन्य पुत्रो से दुर्बल है। सभी सन्तानों में माता का स्नेह समान भाव से होता हैं, फिर भी दुर्बल पुत्र के प्रति माता की अधिक कृपा होती है।''

गोमाता सुरभि के वचन सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित इन्द्र का हृदय भी द्रवित हो गया तथा इन्द्र की कृपा से शीघ्र ही तेज वर्षा होने लगी। सभी जगही पानी ही पानी हो गया, इससे किसान अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने दोनों बैलों को लेकर घर चला गया।

कथा के अन्त में कहा गया है कि सभी सन्तानों मे माता का समान रूप से स्नेहभाव होता है, किन्तु दीन पुत्र के प्रति माता के मन मे अतिशय प्रेम होता है।

'बुद्धिर्बलवती सदा' इति कथायाः सारं हिन्दीभाषायां लिखत–

→ 'बुद्धिर्बलवती सदा' नामक पाठ मूलतः 'शुकसप्ततिः' नामक कथाग्रन्थ से संकलित किया गया है। इस पाठ में वर्णित कथा के माध्यम से बुद्धिमती नामक महिला के बुद्धि–कौशल को दर्शाया गया है। पाठानुसार 'देउल' नामक गाँव में राजसिंह नामक एक राजपूत रहता था। एक बार बुद्धिमती नामक उसकी पत्नी किसी कार्य से अपने दो पुत्रों के साथ अपने पिता के घर (पीहर) जाती है। रास्ते में गहन जंगल में उसे एक बाघ आता हुआ दिखाई दिया। वह शीघ्र ही धृष्टतापूर्वक अपने दोनों पुत्रों के थप्पड़ मारकर बोली– ''क्यों एक–एक बाघ की खाने के लिए झगड़ा कर रहे हो? अभी इसे ही बॉटकर खा लेना। बाद में अन्य कोई बाघ देखा जाएगा''। यह सुनकर बाघ उसे ''व्याघ्रमारी' मानकर भयभीत होकर भाग जाता है किन्तु एक धर्त्त श्रृगाल की बातों में आकर वह उस श्रृगाल को अपने गले में बाँधकर पुनः वहीं जंगल के मार्ग में आ जाता है। उसे देखकर प्रत्युत्पन्न बुद्धिवाली वह महिला श्रृगाल को झिड़कती हुई और धमकाती हुई भयानक रूप से शीघ्रतापूर्वक उसकी और दौड़ती है। यह देखकर भयभीत हुआ बाघ श्रृगाल सहित वहाँ से भाग जाता है।

इस प्रकार वह बुद्धिमती अपने बुद्धि–कौशल से बाघ से उत्पन्न महान् भय से मुक्त हो जाती है। इसलिए सत्य ही कहा गया है कि– ''हमेशा सभी कार्यों में बुद्धि ही बलवती होती है।''

'विचित्रः साक्षी' इति कथायाः सारं हिन्दीभाषायां लिखतु।

→ 'विचित्रः साक्षी' नामक पार में वर्णित कथा के अनुसार एक निर्धन व्यक्ति ने अत्यधिक परिश्रम करके धन एकत्रित किया और उससे अपने पुत्र का एक महाविद्यालय में प्रवेश करा दिया। एक बार वह अपने बीमार पुत्र से मिलने के लिए धनाभाव के कारण पैदल ही चल दिया। रात के. समय एकान्त प्रदेश में पैदल जाना उचित नहीं है, ऐसा मानकर वह पास में ही स्थित गाँव में किसी गृहस्थी के घर में रुक गया।

दुर्भाग्य से उसी रात को उस घर में कोई चोर अन्दर घुस गया तथा एक संदूक को लेकर चला गया। उसके पैरों आवाज से वह अतिथि जाग गया और चोर का पिछा करते हुए पकड़ लिए किन्तु वह चोर ही जोर से चिल्लाने लगा – ''यह चोर है, यह चोर हैं' उसकी आवाज सुनकर गाँव वाले भी वहाँ आ गये और बेचारे अतिथि को ही चोर मानकर उसे भला–पुरा कहने लगे। यद्यपि गाँव का चौकीदार ही चोर था किन्तु उसकी चालाकी से सिपाही ने भी उस अतिथि को ही चोर बतलाकर जेल में डाल दिया। अगले दिन न्यायालय में उन दोनों से न्यायाधीश ने सम्पूर्ण विवरण सुना। न्यायाधीश ने एक विचित्र युक्ति का सहारा लेकर गाँव के बाहर सड़क किनारे पड़े एक व्यक्ति के शव को न्यायालय मे लाने हेतु उन दोनों को आदेश दिया। आदेशानुसार शव लाते समय मार्ग में जब असली चोर ने कहा कि – ''तुमने मुझे चोरी करने से रोका था, अब उसका फल भागोगे। तुम्हें चोरी के आरोप में तीन वर्ष की सजा होगी''

न्यायालय में शव लाने के बाद न्यायाधीश ने फिर से उन दोनों से घटना के विषय में पूछा। जब चौकीदार अपना

शेखावाटी मिशन–100

पक्ष प्रस्तुत करने लगा तभी उस शव ने अपने दुपट्टे को हटाकर एवं न्यायाधीश को प्रमाण करके मार्ग में चौकीदार द्वारा जो कुछ कहा गया था, वह सब सुना दिया। न्यायाधीश ने चौकीदार को कारावास का एण्ड देकर उस व्यक्ति को सम्मानपूर्वक मुक्त कर दिया। वस्तुतः बुद्धिमान लोग नीतिपूर्ण युक्ति से अत्यंत कठोर कार्य को भी सरलता से सम्पन्न कर लेते हैं।

श्लोक अन्वय

प्र:1 अधोलिखितश्लोकस्य अन्वर्य मञ्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत –

अमन्त्रक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्।

अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

अन्वयः– अमन्त्रम् (i) ....नास्ति अनौषधम् (ii) .... नास्ति, अयोग्यः (iii) .... नास्ति, तत्र (iv) .... दुर्लभः।

मञ्जूषाः– पुरूषः, अक्षरं, योजकरू, मूलं

उत्तर– (i) अक्षरं (ii) मूलं (iii) पुरूषः (iv) योजकः

प्र:2 सम्पतौ च विपत्तौ महतामेकरूपता।

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ।। 2।।

अन्वयः महताम् (i)............विपत्तौ च एकरूपता (ii) .... ।

सविता (iii) .... रक्तः तथा अस्तमये च (iv) .... भवति।

मञ्जूषा– रक्तः भवति, सम्पत्तौ, उदये।

उत्तर– (i) सम्पत्तौ (ii) भवति (iii) उदये (iv) रक्तः

प्र:3 आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा चं नावसीदति ।। 3 ।।

अन्वयः – हि मनुष्याणां (i) ....महान् रिपुः (ii) .... । उद्यमसमः (iii) ....न अस्ति यं (iv) .... न अवसीदति।

मञ्जूषा– कृत्वा, आलस्यम्, शरीरस्थो, बन्धुः।

उत्तर– (i) **शरीरस्थो** (ii) **आलस्यम्** (iii) **बन्धुः** **(iv) कृत्वा**

प्र:4 विद्वांस एवं लोकेऽस्मिन चाक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।

अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते ।। 4 ।।

अन्वयः– अस्मिन् (i) .... विद्वान्सः एवं (ii) .... प्रकीर्तिताः

(iii) ....वदने तु ये (iv) .... मते।

मञ्जूषाः– चक्षुर्नामिनी, लोके, अन्येषां चक्षुष्मन्त है।

उत्तर– (i) लोकें (ii) चक्षुष्मन्तः (iii) अन्येषा (iv) चक्षुर्नामनी

प्रः5 य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानिः सुखानि च।

न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च ।। 5।।

मञ्जूषाः– परेभ्यः, सुखानि, कदापि, आत्मनः।

उत्तर– (i) आत्मनः (ii) सुखानि (iii) परेभ्यः (iv) कदापि

प्रः6 आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।

तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणोभ्योऽपि विशेषतः ।।

अन्वयः– आचारः (i) .... धर्मः इति एतद् (ii) .... वचः तस्मात्

(iii) ....सदाचार प्राणौभ्योऽपि (iv) .... ।

मञ्जूषाः– विशेषतः, विदुषां, प्रथमो, रक्षेत्।

उत्तर–(i) प्रथमो (ii) विदुषां (iii) विशेषतः (iv) रक्षेत्

प्रः7 एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।

पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरुदरम् ।।

अन्वयः– एकः (i) .... मानी खगः (ii) .... वने वसति वा

(iii) ....म्रियते (iv) ....याचते।।

मञ्जूषाः– पुरुदरं, चातकः, एव, पिपासितः।

उत्तरः– (i) एव (ii) चातकः (iii) पिपासितः (iv) पुन्दरं

प्रः8 त्यक्तवा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।

परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः।

अन्वयः यो (i) .... धर्मप्रदां वाचं (ii) ....परूषामभ्युदीरयेत सः

पक्वं (iii) .... परित्याज्यं अपक्वं (iv) .... भुङ्क्ते ।

मञ्जूषाः– त्यक्त्वा, विमूढधी, फलं, फलम।

उत्तर = (i) **विमूढधी** (ii) **त्यक्त्वा** (iii) **फलम्** (iv) **फलं**

प्रः9 ददाति प्रतिगृहृजाति, गुह्यमाखयाति पृच्छति।

भुड्क्ते भोजयते चैव षड्–विधं प्रीतिलक्षणम्

अन्वयः – ददाति (i) .... गुह्यम् (ii) .... पृच्छति, भड्क्तो

(iii) .... च, प्रीतिलक्षणं (iv) ....स्व (भवति).

मञ्जूषाः– योजयते, षड्विधम्, आख्याति, प्रतिगृह्णाति।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर–(i) प्रतिगृह्णाति (ii) आख्याति (iii) योजयते (iv) षड्विधम्

प्र:10 श्लोकः– प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।

अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।।

अन्वयः i j Li j fookn%(i) ....हानिः (ii) ....। अन्योन्यसहयोगेन

(iii) .... लाभ (iv) ....।

मञ्जूषाः– जायते, तषाम, प्राणिनं, प्रजायते।

उत्तर– (i) **प्राणिनं** (ii) **जायते** (iii) **तेषाम्** (iv) **प्रजायते**

प्र:11श्लोकः– दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।

नीति युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते।।.

अन्वयः– मतिवैभवशालिनः (i) ....युक्तिं समलाम्ब्य (ii) ....कर्माणि

(iii) .... लीलया एवं (iv) ....।

मञ्जूषाः– अपि, फुकुर्वते, नीति, दुष्कराणि

उत्तर– (i) नीति (ii) दुष्कराणि (iii) अपि (iv) प्रकुर्वते।

प्र:12 श्लोकः–अगाधजलसञ्चारी न गर्व याति रोहितः।

अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते ।।

अन्वयः – अगाधजलः (i) .... राहित गर्व (ii) .... याति

(iii) .... उदकमात्रेण (iv) .... फुरफुरायते।

मञ्जूषा= न, अग्डुष्ठ, सञ्चारी, शफरी

उत्तर– (i) सञ्चारी (ii) न (iii) अगुड्ष्ठ (iv) शफरी

प्र:13 श्लोकः–यो न् रक्षाति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।

जन्तुन पार्थिवरूपेण स कृत्तान्तो न संशयः।।

अन्वयः– यः (i) ....वित्रस्तान् पीड्यमानान् (ii) .... पार्थिवरूपेण

सदा न (iii) .... सः कृतान्तोः न (iv) ....।

मञ्जूषाः– जन्तून्, संशय, पर, रक्षति

उत्तर = (i) **परं,** (ii) **जन्तून** (iii) **रक्षति,** (iv) **संशय**

शेखावाटी मिशन–100

श्लोक लेखनम्

श्लोक लेखनम्

प्रश्नः— स्वपाठ्यपुस्तकाल, श्लोकद्वयं लिखत यद् अस्मिन् प्रश्नपत्रे न स्यात्।

1. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वां यं नावसीदति।।

2. सेविताव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छांया केन निवार्यते।।

3. अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

4. संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपतां।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।।

5.विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम्।
अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः।।

6. पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य कि तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता।।

7. एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।
पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।।

प्रश्न निर्माणम्

अधोलिखितवाक्येषु रेखाखण्डित— पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं करूत—

(1) उद्याने <u>पक्षिणां</u> कलरवं चेतः प्रसादयति।

प्रश्न निर्माण—उद्याने केषां कलरवं चेतः प्रसादयति?

(2) पाषणीसभ्यता <u>लतातरुगुल्माः</u> प्रस्तरतले पिष्टाः के सन्ति।

प्रश्न निर्माण—पाषणीसभ्यता के प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति?

(3) <u>प्रकृत्याः</u> सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

प्रश्न निर्माण—कस्याः सन्निधो वास्तविकम् सुखं विधते?

(4) बुद्धिमती <u>चपेटया</u> पुत्रौ प्रहतवती।

प्रश्न निर्माण—बुद्धित्मती कया पुत्रौ प्रहतवती ?

(5) त्वम् <u>मानुषात्</u> विभेषि।

प्रश्न निर्माण—त्वम् कस्मात् विभेषि?

(6) भृगङ्गा <u>रसालमुकुलानि</u> समाश्रयन्ते।

प्रश्न निर्माण—भृङ्गा कानि समाश्रयन्ते?

शेखावाटी मिशन—100

(7) पतङ्गाः के अम्बरपथम् आपेदिरे।

प्रश्न निर्माण–के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(8) सरसः शोभा राजहंसेन भवति।

प्रश्न निर्माण–कस्य शोभा राजहंसेन भवति?

(9) राजहंसेन सरसः अम्बूनि निपीतानि।

प्रश्न निर्माण–केन सरसः अम्बूनि निपीतानि?

(10) एतादृशी भयावहघटना गढवालक्षेत्र घटिता।

प्रश्न निर्माण–कीदृशी भयावहघटना गढ़वालक्षेत्र घटिया।

(11) विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुड़क्ते।

प्रश्न निर्माण– कः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुड़क्ते।

(12) जनकेन सुताय शैशवे विद्याधनं दीयते।

प्रश्न निर्माण–जनकेन कस्मै शैशवे विद्याधनं दीयते?

(13) आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः परेषाम् अनिष्टं न कुर्यात्।

प्रश्न निर्माण–आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः केषाम् अनिष्टं न कुर्यात?

(14) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।

प्रश्न निर्माण– कस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः?

(15) ऊभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्न निर्माण– ऊभौ शवं कुत्र स्थापितवन्तौ?

(16) वानरः आत्मानं वनराजपदाय योग्यः मन्यते।

प्रश्न निर्माण– वानरः आत्मानं कस्मै योग्यः मन्यते?

(17) सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

प्रश्न निर्माण– सर्वे काम् प्रणमन्ति।

(18) समीपे एका नदी वहति।

प्रश्न निर्माण– समीपे का वहति?

(19) वनराजपदाय सुपात्रं चीयते।

प्रश्न निर्माण– कस्मै सुपात्रं चीयते?

(20) त्वं कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकराषि।

प्रश्न निर्माण–त्वं केन वातावरणमादुलीकरोषि?

(21) वसन्तसमये पिककाकयोः भेदः दृश्यते।

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्न निर्माण– वसन्तसमये कयोः भेदः दृश्यते?

(22) उद्यमेन समः बन्धु नास्ति।

प्रश्न निर्माण– केन समः बन्धु नास्ति?

(23) वसन्तस्य गुणं पिकः वेति न वायसः।

प्रश्न निर्माण– कस्य गुणं पिकः वेति न वायसः।

(24) आलस्यं मनुष्याणां महान् रिपुः।

प्रश्न निर्माण– किम् मनुष्याणां महान् रिपुः?

(25) सुराधिपः ताम् अपृच्छत।

प्रश्न निर्माण– कः ताम् अपृच्छत्?

(26) सहस्त्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दःखी आसीत्।

प्रश्न निर्माण– केषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दःखी आसीत्?

(27) वृषभः क्षेत्र पपात।

प्रश्न निर्माण– वृषभः कुत्र पपात?

(28) बलीवर्दः जवेन गन्तुम् अशक्तः आसीत्।

प्रश्न निर्माण– कः जवेन गन्तुम् अशक्तः आसीत्?

(29) सर्वेवपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एव।

प्रश्न निर्माण– केषु जननी तुल्यवत्सला एव?

(30) सव्यवधानं चरित्रलोपाय न भवति।

प्रश्न निर्माण– किम् चरित्रलोपाय भवति?

(31) तस्याः द्वे नामनी।

प्रश्न निर्माण– कस्याः द्वे नामनी?

(32) सिंहासनस्थः रामः प्रतिवशति।

प्रश्न निर्माण– सिंहासनस्थः कः प्रतिवशति ?

(33) गणतन्त्रदिवसपर्वणि भारताराष्ट्रम उल्लासे मग्नमासीत् ।

प्रश्न निर्माण– कदा भारताराष्ट्रम उल्लासे मग्नमासीत्?

(34) विवशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।

प्रश्न निर्माण– किदृशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्येत?

(35). भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छाजनपदं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती।

प्रश्न निर्माण– भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छाजनपदं केषु परिवर्तितवती?

शेखावाटी मिशन–100

(36) तदिदानीम् भूकम्पकारणं विचारणीयं तिष्ठति।

प्रश्न निर्माण– तदिदानीम् किम् विचारणीयं तिष्ठति ?

(37) भृङ्गाः रसालमुकुलानि आश्रयन्ते।

प्रश्न निर्माण– भृङ्गाः कानि आश्रयन्ते ?

(38) पतङ्गाः अम्बरपथम् आपेदिरे।

प्रश्न निर्माण– के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(39) चातकः वने वसति।

प्रश्न निर्माण– कः वने वसति ?

(40) सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

प्रश्न निर्माण– सर्वे कां प्रणमन्ति?

अद्योलिखित अपठित गद्यांश पठित्वा एतत आधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशन लिखित

प्रः1 अधोलिखितं गंधाशे पठित्वा एतकाधारित प्रश्नानाम् उतराणि यथानिद लिखत–

सताम जनानां संगति सत्संगति कथ्यते। मानवः यादुशै जनैः सहः वसति। तादृशः एव भवति। सज्जनानां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति। उन्नति महध्नपदं च अंलकरोति। दुर्जनानां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति पतनं विनाशे च प्राप्नोति। अत मनुष्यस्योपरि संगते महान प्रभावो भवति बाल्यकाले विशेषतों बालकस्योपरि संगते महान प्रभाव भवतिं। ये यादृशै बालेकैः सह उपविशन्ति उतिष्ठन्ति खादन्ति पिबन्ति च ते तेथैव स्वाभावं धारयन्ति। अतः बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया !

सजनानां संगत्या मनुष्यः उन्नतिं प्राप्नोति । तस्य विधा कीर्तिश्च वर्धते। दुर्जनानां संसर्गेण बहव धनयः भवन्ति, यथा– दुर्जनसंसर्गेण मनुष्योड सद्वृतो भवति दुर्विचार युग्तो भवति, तस्य बुद्धिदुर्षिता भवति, अतः बुद्धिः क्षीयते मनुष्यः दुर्व्यसनोग्रस्त भवति। अतस्तस्य शरीर क्षीणं निर्बलं च भवति। तस्य कीर्ति नश्यति सर्वत्रादूरो भवति। अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्त्यर्थ सवैरपि सर्वदा संत्सगतिः करणीया, दुर्जनसंगतिः सदा परिहर्तव्या !

प्रश्न–(क) एकपदेन उतरत –

(i) केषां जनानां संगतिः सत्संगतिः कभ्यते?

उतर– सताम्

(ii) केषां संसर्गेण बहवः हानयः भवन्ति?

उत्तर – दुर्जनानाम्

(ख) पूर्ण वाक्येन उतरत्–

(i) सज्जानानांम सम्पर्केण मनुष्यः किम् अलंकरोति? तथा केन मनुष्यस्थः बुद्धि क्षीयते?

उत्तर – सज्जनानाम् सम्पर्केण मनुष्यः उन्नति महत्पदं च अलंकरोति तथा दुर्जनसंसर्गेण मनुष्यस्य बुद्धिः क्षीयते।

(ग) अस्य गंधाशस्य समुचित शीर्षकं लिखत् ।

उत्तर–सत्संगतेः महत्वम्।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'प्राप्नोति' इति क्रियापदस्य गंधाशे कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तर–मनुष्यः।

(ii) महान् इति विशेषणस्य गंधाशात् विशेष्यपद चित्वा लिखत।

उतर – प्रभावः

(iii) तस्य कीर्तिः नश्यतिः– इत्यत्र 'तस्य', सर्वनाम पद, स्थाने संज्ञापदं लिखत् – उतर – दुर्जनस्य

प्र:2 मानवस्य बौद्धिक विकासाय ज्ञानवर्धनाय च पुस्तकालयानां महत्वपूर्ण स्थान वर्तते। पुस्तकालयेषु विविध पुस्तकानां संग्रहो भवति। अत्र विविध भाषाणां पत्र – पत्रिकादयोऽपि प्रतिदिनं आयान्ति। अस्माकं पुस्तका लयः नगरस्य रमणीय स्थाने वर्तते। अस्मिन् दशसहस्त्राणि पुस्तकानि सन्ति। अस्माकं पुस्तकालये हिन्दी–आंग्ल संस्कृत भाषाणां पत्र– पत्रिकाः प्रतिदिन आयान्ति। अस्य समीपे एकः वाचनालयः वर्तते। यत्र बहवः जनाः छात्रा युक्तश्च प्रतिदिन आगत्य स्वाध्यायं कुर्वन्ति।

अस्माकं पुस्तकालस्य भवनं विशालं रमणीयं च वर्तते। अस्य पुस्तकालस्य सर्वे जनाः प्रंशसा कुर्वन्ति। अस्मांकं ज्ञानवर्धनाय अस्य महती भूमिका वर्तते। अयम् एक आदर्शः पुस्तकालयः विधते!

प्रश्न –(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कस्य समीपे वाचनालयः वर्तते?

उत्तरम् – दशसहस्त्राणि,

(ii) अस्माकं पुस्तकालये कति पुस्तकानि सन्ति?

उत्तरम्– पुस्तकालस्य

प्रश्न –(ख) पूर्ण वाक्येन उत्तरत–

(i) अस्माकम् पुस्तकालयः कुत्र वर्तते?

उतरम् – अस्माकम् पुस्तकालयः नगरस्य रमणीये स्थाने वर्तते।

प्रश्न– (ग) अस्थ गंधाशस्य समुचितं शीर्षक लिखत्।

उत्तरम् – अस्माकं पुस्तकालयः।

प्रश्न– (घ) निर्देशानुसारं प्रदत्तविकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरम् चित्वा लिखत्।

(i) पत्र – पत्रिकाः इति कर्तृ पदस्य गंधाशे क्रियापदे किमस्ति?

उत्तरम् – आयान्ति।

(ii) 'निन्दाम्' इत्यस्य विलोमपदं गंधाशात् चित्वा लिखत्।

उत्तरम् प्रशंसाम्।

(iv) आदर्शः इति विशेषणस्य गंधाशात विशेष्य पद चित्वा लिखत्।

उत्तरम् – पुस्त कालयः ।

प्रः3 अधोलिखित गंद्याशं पठित्वा एतदा् हारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत!

डॉ भीमराव आम्बेडकरः संस्कृते पठितुम दृष्टवान् आसीत, परन्तु सः अस्पृश्यः इति कारणतः कश्चन संस्कृतं ज्ञः आम्बेडकरं निराकृतवान्– इति विषयः तु आम्बेडकर–महोदयस्य जीवन सम्बन्धी – पुस्तकेषु लिखितः अस्ति, सः विषयः तु प्रचारें अपि अस्ति। 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति सांविधान अपि सभायां संशोधन – प्रस्तावः आनीतः आसीत्। अयं विषयः अपि कतिपय वर्षेभ्यः पूर्वः ज्ञातः आसीत् । परम इदानी कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति। नव प्राप्त प्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. आम्बेडकरः न केवलं संस्कृनं जानाति स्म, अपितु सः सस्कृतेन भाषते रम इति। यतः सविधानस भायां यदा राजभाषा सम्बन्धे चर्चा प्रर्वतते। स्म तदा डॉ० आम्बेडकरः पण्डित लक्ष्मी कान्त मैत्रेण सह संस्कृतेन वातोलापं कृतवान्। तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापित्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आव्यन्।

प्रश्न (क) एकपदेन उतरत–

(i) डॉ. आम्बेडकरः केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान्?

उत्तरः– पण्डित लक्ष्मीकान्त मैत्रेण सह!

(ii) कः संस्कृतस्य राजा भाषात्त्वं समर्थितवान्?

उत्तरः– डॉ आम्बेडकर !

(ख) पूर्णवाम्येन उतरत् ।

(i) संविधान सभायां कः संशोधन प्रस्तावः आनीतः?

उत्तर – भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत् इति सविधान सभायां संशोधन प्रस्तावः आनितः।

(ग) उपर्युक्त गंद्याशस्य समुचितं शीर्षक लिखत् ।

उत्तर – डॉ. भीवराव आम्बेडकरस्य संस्कृत निष्ठा।

(घ) भाषिक कार्यम –

(i) भाषते स्म गति क्रियापदस्यं कर्तृपदं किम्?

उत्तर– डॉ. अम्बेडकरः।

(ii) नूतनः इति विश्लेषणपदस्य गंधाशे विशेष्य पदं किमस्ति?

उत्तर– विषयः।

(iii) 'सः संस्कृत जाति स्म' –इत्यत्रः सः इति सर्वनाम स्थाने संज्ञापद किम्?

उत्तर–डॉ. अम्बेडकरः।

प्रः4 अधोलिखित गंद्याश पठित्वा एतदाधाति प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत–

भारत वर्षः एकः महान देशः वर्तते। अस्मिन् अनेके प्रदेशाः सन्ति। तेषु साम्प्रतं राजस्थान प्रदेशः एकं राज्यं वर्तते। अस्य राजधानी जयपुरं अस्ति। राजस्थान प्रदेशस्य काश्चन एतादृशः विशेषताः सन्ति याः खलु अन्यत्र न लभन्ते। अस्य प्रदेशस्य भूमिः वीराणां वीरंगनानाञ्च जननी वर्तते। अत्र महाराणा प्रतापः महाराणा सांगा वीर दुर्गादास सदृशाः वीरा समुत्पन्नाः। अत्रैव पद्‌मिनी पन्ना सदृश्यः वीरांगनाः समुत्पन्नाः। अधापि राजस्थानस्य अनेके, वीराः देश सेवायां तत्पराः वर्तन्ते। अयं प्रदेशः न केवलं वीराणां भूमिः अपितु विदुषा जन्मस्थली कार्यस्थली च वर्तते। अत्र अनेके विद्वान्स काले काले समुप्रनाः। राजस्थानस्य राजधानी जयपुरं तु लघुकाशी मन्यते। अत्र संस्कृतष्टय अनेके विद्वान्सः अभवन्।

राजस्थान प्रदेश अनेकानि दर्शनीय – स्थलानि सन्ति। प्राकृतिक सौन्दर्य दृष्ट्याऽपि प्रदेशोडयं सुरम्यः तर्तते। अत्र जयपुर–उदयपुर–भरत पुरादयः विभिन्न–नगराणि विश्व प्रसिद्धानि सन्ति। बहवः पर्यटकाः अत्र भ्रमणार्थम् आगच्छन्ति!

प्रश्न– (क)एक प्रदेन उत्तरत–

(i) कस्य प्रदेशस्य राजधानी जयपुरं वर्तते ?

उत्तर – राजस्थान प्रदेशस्य,

(ii) लघुकाशी मन्यते ?

उत्तर – जयपुरं

(ख) पूर्णवाम्येन उतरत –

(i) राजस्थानस्य भूमिः केषां जननी वर्तते ? तस्य अनेके वीराः कुत्र तत्पराः सन्ति?

उत्तर– राजस्थानस्य भूमिः वीराणां वीरंगनानाञ्च जननी वर्तते। तस्य अनेके वीराः देश सेवायां तत्पराः सन्ति।

(ii) आय गधानस्य समुचित शीर्षकं लिखत्।

उत्तर– राजस्थान–प्रदेशः।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'पर्यटकाः' इति कर्तृपदस्य गंधाशे क्रियापदे किमस्ति ?

उत्तर – आगच्छन्ति।

(ii) 'विद्वान्सः' इति विशेष्य पदस्य गंधाशे विशेषण पदं किम्?

उत्तर–अनेके!

शेखावाटी मिशन–100

(iii) ''अस्मिन् अनेके प्रदेशाः सन्ति।'' इत्यत्र 'अस्मिन्' सर्वनाम पद स्थाने संज्ञा पदं लिखत।

उत्तर – भारत वर्षे।

प्र:5 अधोलिखितं गद्याशं पठित्वा तदाधारित प्रश्ननानाम् उत्तराणि यथा निदेश लिखत–

इदं हि विज्ञान प्रधाने युगम्। 'विशीष्टं ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते। अस्यां शताब्द्या सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रमाणे परीदृश्यते। अधुना नहि तादृशं किमपि कार्य यत्र विज्ञानस्य साहाम्यं नापेक्ष्यते। आवागमने, समाचार प्रेषणे, दूरदर्शने, सम्भाषणे शिक्षणे, चिकित्सा क्षेत्रे, मनोरंजन कार्य, अन्नोत्पादने, वस्त्र कृर्माणी, तथैवागन्यकार्य कलापेषु विज्ञानभ्य प्रभावहस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते। सम्प्रति मानवः प्रकृति वशीकृत्य तो स्वेच्छया कार्येषु नियुर्क्ते। तथाहि वैज्ञानिकै रने के आविष्काराः विहिताः। मानवजातेः हिताहितम् अपश्यद्भिः, वैज्ञानिकै। राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणु शक्तेः अस्तनिर्माण एवं विशेषतः उपयोगो विहितः। तदुत्पादितं च लोकवंसकार्यम् अतिघोरं निघृणं च। अयं च ब विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणु शक्तैपराधः पुरुषापराधः खलुः एवः अतोऽन्य मानव कल्याणार्थ भव प्रयोगः करणीयः।

प्रश्न– (क) एकपदेन उतरत –

(i) विशिष्टं ज्ञानं किम् कथ्यते ?

उत्तर – विज्ञानम्

(ii) कैः अनेके आविष्काराः विहिताः?

उतर – वैज्ञानिकैः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(ii) अधुना समस्त कार्यकलामेषु कस्य प्रभावः अनुभूयते?

उत्तर – अधुना समस्त कार्य कानामेषु कस्य–विज्ञानस्य प्रभावः अनुभूयते!

(ग) उपर्युक्त गंधास्य समुचित शीर्षक लिखत्।

उत्तर–विज्ञानस्थ प्रभावः।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'दरीदृश्यते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तर–प्रभावः।

(ii) 'विज्ञान प्रधानम्' इति विशेषणाय गंधाशे विशेष्यपदं किम् ?

उत्तर–युगम्।

शेखावाटी मिशन–100

सन्धि प्रकरणम्

सन्धि कार्यम

पद	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(1) धूम मुञ्चति	धूमम् +मुञ्चति	अनुस्वारः सन्धि
(2) अन्तर्जगति	अन्तः + जगति	रुत्वम् संधि
(3) सत्+चित्	सच्चित	श्चुत्वम् सन्धि
(4) हरिः + त्राता	हरिस्त्राता	सत्वम् सन्धि
(5) प्रातः + उदेति	प्रातरूदेति	सत्वम् सन्धि
(6) मनः + रथः	मनोरथ	उत्वम् सन्धि
(7) उच्चारणम्	उत्+चारणम्	श्चुत्व सन्धि
(8) मनः + तापः	मनस्ताप	सत्व सन्धि
(9) निश्छलः	निः + छलः	सत्व सन्धि
(10) सज्जनः	सत् + जनः	श्चुत्व सन्धि
(11) राष्ट्रम	राष् + त्रम	ष्टुत्व सन्धि
(12) विपत्कालः	विपद् + कालः	चर्त्व सन्धि
(13) बालो याति	बालः + यााति	उत्व सन्धि
(14) रामस् + टीकते	रामष्टीकते	ष्टुत्व सन्धि
(15) अच् + अन्तः	अजन्तः	जश्त्व सन्धि
(16) वृक्षाद् + पतति	वृक्षात्पतति	जश्त्व सन्धि
(17) शरद + कालः	शरत्कालः	चत्व सन्धि
(18) इष्टः	इष् + तः	ष्टुत्व सन्धि
(19) सत्पुत्रः	सद् + पुत्रः	चर्त्व सन्धि
(20) यस्तु	यः + तु	सत्व सन्धि
(21) उज्ज्वलः	उत् + ज्वलः	श्चुत्व सन्धि
(22) दिगम्बर	दिक् + अम्बरः	जश्त्व सन्धि
(23) हरिं वन्दे	हरिम् + वन्दे	अनुस्वार सन्धि
(24) दिग्गजः	दिक् + गज	जश्त्व सन्धि
(25) तत्फलम्	तद् + फलम	चर्त्व सन्धि
(26) नमः + तुभ्यम्	नमस्तुभ्यम्	सत्व सन्धि

शेखावाटी मिशन–100

(27) नमस्ते	नमः + ते	सत्व सन्धि
(28) कोऽयम्	कः + अयम्	उत्व सन्धि
(29) धनुः + टंकर	धनुष्टङ्कारः	सत्व सन्धि
(30) पितुर्गृहम	पितुः + गृहम	रुत्व सन्धि
(31) सञ्चरणम्	सम् + चरणम्	अनुस्वार सन्धि
(32) कः + अत्र	कोऽत्र	उत्व सन्धि
(33) सत्यम् + वद	सत्यं वद	अनुस्वार सन्धि
(34) मनोहरः	मनः + हरः	उत्व सन्धि
(35) वागीशः	वाक् + ईशः	जश्तव सन्धि
(36) प्रकृतिरेव	प्रकृतिः + एव	रूत्व सन्धि
(37) षडाननः	षट् + आननः	जश्त्व सन्धि
(38) रामः + च	रामश्च	श्चुत्व सन्धिष
(39) सद + कारः	सत्कारः	चर्त्व सन्धि
(40) सः + आगच्छति	स गच्छति	विसर्ग लोप
(41) एषः + विष्णुः	एष विष्णुः	विसर्ग लोप
(42) बालाः + इच्छति	बाला इच्छति	विसर्ग लोप
(43) वृद्धाः + यान्ति	वृद्धा यन्ति	विसर्ग लोप
(44) प्रातः + गच्छति	प्रातर्गच्छति	रुत्व सन्धि

समास विग्रह

पद	समास विग्रह	समास का नाम
(1) अनुराजम्	राज्ञः पश्चात्	अव्ययीभाव समासः
(2) अनुरथम	रथस्य पश्चात्	अव्ययीभाव समासः
(3) उपनदि	नघाः समीपं	अव्ययीभाव समासः
(4) उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपे	अव्ययीभाव समासः
(5) सचित्रम्	चित्रेण सहितम्	अव्ययीभाव समासः

शेखावाटी मिशन–100

(6) निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
(7) निर्मक्षिकम्	मक्षिकानाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
(8) निर्जलम	जलस्य अभावः	अव्ययीभाव समासः
(9) प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभाव समासः
(10) प्रतिगृहम्	गृहं गृहं प्रति	अव्ययीभाव समासः
(11) प्रतिग्रामम	ग्रामं ग्रांम प्रति	अव्ययीभाव समासः
(12) यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रमय	अव्ययीभाव समासः
(13) यथेच्छम	इच्छाम् अनतिक्रमय	अव्ययीभाव समासः
(14) यथाविधि	विधिम् अनतिक्रमय	अव्ययीभाव समासः
(15) नीलम् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	कर्मधारय समासः
(16) महान् च असौ राजा	महाराजः	कर्मधारय समासः
(17) घन इव श्यामः	घनश्यामः	कर्मधारय समासः
(18) कमलम् इव मुखम	कमलमुखम्	कर्मधारय समास
(19) चन्द्र इव मुखम	चन्द्रमुखम्	कर्मधारय समास
(20) सप्तानां दिनानां समाहारः	सप्तदिनम्	कर्मधारय समास
(21) पञ्चाना पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्	द्विगु समास
(22) त्रयाणां भुवनाना समाहारः	त्रिभुवनम्	द्विगु समास
(23) माता च पिता च	पितरौ	द्वन्द्व समास
(24) हेमन्तश्च शिशिरश्च ग्रीष्मश्चशिशिरा	हेमन्तग्रीष्मशिशिराः	द्वन्द्व समास
(25) पञ्चानां रात्रीणां समाहारः	पञ्चरात्रम्	द्विगु समास
(26) चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्	द्विगु समास
(27) त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	द्विगु समास
(28) पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी	द्विगु समास
(29) सप्तानां शतानां समाहारः	सप्तशती	द्विगु समास
(30) अष्टाना अध्यायानां समाहारः	अष्टाध्यायी	बहुव्रीहि समास
(31) पीतम् अम्बर यस्यसः	पीताम्बरः (कृष्ण)	बहुव्रीहि समास

शेखावाटी मिशन–100

(32) महाबाहू:	महान्तौ बाहू यस्य सः (विष्णुः)	बहुव्रीहि समास
(33) दशाननः	दश आननानि यस्य सः (रावणः)	बहुव्रीहि समास
(34) चतुर्मुखः	चत्वारि मुखानि यस्य सः। (ब्रह्मा)	बहुव्रीहि समास
(35) चक्रपाणिः	चक्र पाणौं यस्य सः (विष्णुः)	बहुव्रीहि समास
(36) चन्द्रमुखीः	चन्द्र इव मुखं यस्याः सा (नारी)	बहुव्रीहि समास
(37) शूलपाणिः	शूलं पाणौं यस्य सः (शिवः)	बहुव्रीहि समास
(38) चन्द्रशेखरः	चन्द्र शेखरे यस्य सः (शिवः)	बहुव्रीहि समास
(39) धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	धर्मार्थकाममोक्षाः	द्वन्द्व समास
(40) यथोचितम्	उचितम् यथा	द्वन्द्व समास
(41) उपगृहम	गृहस्य समीपम	अव्ययीभाव समास
(42) यमुनायाः समीपम्	उपयमुनम्	अव्ययीभाव समास
(43) प्रत्येकं	एकम् एकम् प्रति	अव्ययीभाव समास
(44) भीमार्जुनौ	भीमः च अर्जुनः च	द्वन्द्व समास
(45) पाणी च पादौ च	पाणिपादम्	द्वन्द्व समास
(46) पीताम्बरं	पीतम् अम्बरम्	कर्मधाराय समास
(47) प्रतिकूलम	कूलं कूलं प्रति	अव्ययीभाव समास
(48) कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	कर्मधाराय समास
(49) धनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधाराय समास
(50) पार्वती च परमेश्वरः च	पार्वतीपरमेश्वरौ	द्वन्द्व समास
(51) सचक्रम	चक्रेण सहितम्	अव्ययीभाव समास
(52) मुखकमलम्	मुखं कमलम इव	कर्मधाराय समास
(53) हयाश्च नागाश्च	हयनागाः	द्वन्द्व समास
(54) दृष्टहृदय	दृष्टं हृदयं यस्य सः	द्वन्द्व समास
(55) हरिश्च हरश्च	हरिहरौ	द्वन्द्व समास

शेखावाटी मिशन–100

समास के महत्वपूर्ण उदाहरण

पद	समास विग्रह	समास का नाम
(1) धनुष्पाणिः (राम)	धनुः पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि समास
(2) रघुकुलजन्मा (राम)	रघुकुले जन्म यस्य सः	बहुव्रीहि समास
(3) त्रिफला	त्रयाणां फलानाम् समाहारः	द्वन्द्व समास
(4) शताब्दी	शतस्य अब्दानां समाहारः	द्वन्द्व समास
(5) सप्ताहः	सप्तानाम् अह्नां समाहारः	द्वन्द्व समास
(6) विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	कर्मधारय समास
(7) पुरुषव्याघ्रः	पुरुषः व्याघ्रः इव	कर्मधारय समास
(8) वज्रकठोरम्	वज्रम् इव कठोरम्	कर्मधारय समास
(9) कुसुमकोमलम्	कुसुमम् इव कोमलम्	कर्मधारय समास
(10) रक्तकमलम्	रक्तम् कमलम्	कर्मधारय समास
(11) श्वेतवस्त्रम्	श्वेतम् वस्त्रम्	कर्मधारय समास
(12) उन्नतवृक्षः	उन्नतः वृक्षः	कर्मधारय समास
(13) कुराजा	कुत्सितः राजा	कर्मधारय समास

शेखावाटी मिशन–100

कारक प्रकरणम्

कारक प्रकरणम्

प्रश्नः– रेखांकित पदे विभक्तिः तत् कारणं लिखत्–

	उदाहरणम्	विभक्तिः	कारणम्
(1)	नदी क्रोश कुटिला अस्ति।	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यंत संयोगे इति सूत्रेण
(2)	राजमार्गम् अभितः वृक्षाः सन्ति।	द्वितीया	अभितः योगे
(3)	ग्रांम परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीया	परितः योगे
(4)	विद्यालयम् निकषा देवालयः अस्ति।	द्वितीया	निकषा योगे
(5)	प्रदीपः पुस्तकं विना पठति।	द्वितीया	विना योगे
(6)	रामं श्यामं च अन्तरा देवदत्तः अस्ति।	द्वितीया	अन्तरा योगे
(7)	दुष्टं धिक्।	द्वितीया	धिक योगे
(8)	हा दुर्जनम्।	द्वितीया	हा योगे
(9)	छात्राः विधालयं प्रति गच्छन्ति।	द्वितीया	प्रति योगे

(10)	राजपुरुषः चौरम् अनु धावति।	द्वितीया	अनु योगे
(11)	गणेशः वनं यावत् गच्छति।	द्वितीया	यावत् योगे
(12)	भूमिम् अधोऽधः जलम् अस्ति।	द्वितीया	अधोऽधः योगे
(13)	सुरेशः शय्याम् अधिशेते।	द्वितीया	अधिशेते योगे
(14)	नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते।	द्वितीया	अध्यास्ते योगे
(15)	गोपालः गां दुग्धं दौग्धि।	द्वितीया	दुह् योगे
(16)	हरिः वैकुण्ठम् आवसति।	द्वितीया	आवसति योगे
(17)	सुरेशः महेशं पुस्तक याचते।	द्वितीया	याच योगे
(18)	पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति।	द्वितीया	पच् योगे
(19)	सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।	द्वितीया	प्रच्छ् योगे
(20)	नृपः शत्रु राज्यं जयति।	द्वितीया	जि योगे
(21)	सः अजां ग्रामं नयति।	द्वितीया	नि योगे
(22)	कृषकः क्षेत्रं महिषीं कर्षति।	द्वितीया	कृष् योगे
(23)	पिता पुत्राय क्रुध्यति।	चतुर्थी	क्रुध् योगे
(24)	किंकरः नृपाय द्रुह्यति।	चतुर्थी	द्रुह योगे
(25)	दुर्जनः सज्जनाय ईर्ष्यति।	चतुर्थी	ईर्ष्य् योगे
(26)	सुरेशः महेशाय असूयति।	चतुर्थी	आसूय् योगे
(27)	रामाय नमः।	चतुर्थी	नमः योगे
(28)	गणेशाय स्वस्ति।	चतुर्थी	स्वस्ति योगे
(29)	प्रजापतये स्वाहा।	चतुर्थी	स्वाद्य योगे
(30)	दैत्येभ्यः हरिः अलम्।	चतुर्थी	अलम् योगे
(31)	शिष्यः गुरवे निवेदयति।	चतुर्थी	निवेदय् योगे
(32)	साधुः सज्जनाय उपदिशति।	चतुर्थी	उपदिश् योगे
(33)	ज्ञानात् ऋते मुक्तिः न भवति,।	पंचमी	ऋते योगे
(34)	छात्राः विद्यालयात् बाहिः गच्छन्ति।	पंचर्मी	बहि योगे
(35)	यशवन्तः पठनात् अनन्तरं क्रीडाक्षेत्रं गच्छति।	पंचमी	अनन्तरं योगे
(36)	वृक्षस्य अद्यः बालकः शेते।	षष्ठी	अधः योगे
(37)	भवनस्य उपरि खगाः सन्ति।	षष्ठी	उपरि योगे
(38)	नगरस्य समीपं ग्रामः अस्ति।	षष्ठी	समीपम् योगे

शेखावाटी मिशन–100

(39)	बालकस्य कृते दुग्धम् आनय।	षष्ठी	कृते योगे
(40)	बालकस्य पितरि श्रद्धा अस्ति ।	सप्तमी	श्रद्धा योगे
(41)	महेशस्य स्वमित्रे विश्वासः अस्ति।	सप्तमी	'विश्वासः' योगे
(42)	ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीय	'परितः' योगे
(43)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	सप्तमी	'यतश्च निर्धारणम्' सूत्रेण
(44)	हरये रोचते भक्तिः।	चतुर्थी	रुच् धातोः योगे योगे
(45)	हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।	द्वितीया	'अधि+शीङ्' योगे
(46)	कृषकः ग्रामम् अजां नयति।	द्वितीया	नी धातोः योगे
(47)	साधुः कर्णाभ्यों बधिरः अस्ति।	तृतीया	'येनाङ्गविकार' सूत्रेण
(48)	हिमालयात् गंगा प्रभवति।	पंचमी	'भूवः प्रभवः' सूत्रेण
(49)	रामः श्यामाय शतं धारयति।	चतुर्थी	'धारेरुत्तमर्ण' सूत्रेण
(50)	हनुमते नमः।	चतुर्थी	'नमः' योगे
(51)	जलं विना जीवनं नास्ति।	द्वितीया	'विना' योगे
(52)	पार्वती 'नमः शिवायः' इति जयम अकरोत्।	चतुर्थी	नमः योगे
(53)	मन्दिरम् उपर्युपरि ध्वजः विद्यते।	द्वितीया	उपर्युपरि योगे
(54)	ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीया	परितः योगे
(55)	सीता गीतया सह पठित।	तृतीया	सह योगे
(56)	नगरात् पृथक आश्रमः अस्ति।	पंचमी	पृथक योगे
(57)	राजमार्गम् अभितः वृक्षा सन्ति।	द्वितीया	अभितः
(58)	रामः लक्ष्मणेन सह वनं गच्छति।	तृतीया	सह
(59)	पिता पुत्राय कुध्यति।	चतुर्थी	क्रुध्

प्रत्यय प्रकरणम

परीक्षापयोगी महत्वपूर्ण(उत्तराणि)

(1) श्रीधरः ....आसीत् + (धन+इनि) = धनी

(2) .... बालाः पाठं पाठयति (शिक्षक+टाप्) = शिक्षिका

(3) सा बुद्धिमती अस्ति। = बुद्धि + मतुम्।

(4) शिवस्य पत्नी पार्वती अस्ति। = पार्वत + ड़ीप।

(5) प्रसन्नो बालकः .... (शंक् +शानच्) = शंकमानः

(6) .... गोपालः गच्छति। (पठ् + शत्) = पठन्

(7) ज्ञानवान् सर्वत्र पूज्यते। = ज्ञान + मतुप्।

(8) चटका वृक्षे तिष्ठति। = चटक + टाप्।

(9) मनसा सततं .... । (स्मृ+अनीयर) = स्मरणीयम्

(10) ग्रामं .... तृणं पश्यति। (गम्+शतृ) = गच्छन्

(11) वचने का दरिद्रता। = दरिद्र + तल्।

(12) बालिका पुस्तक पठति। = बालक + टाप् ।

(13) लोकहिते मम .... । (कृ + अनीयर) = करणीयम्

(14) लोके .... दुर्लभम् (नर +त्व) = नरत्वं

(15) सा .... मधुर गायति। (बालक + टाप्) = बालिका

(16) अस्माभि सदैव अनुशासन ....। (पाल् + अनीयर) = पालनीयम्

(17) जीवने परिश्रमस्य .... भवति। (महत् + त्व) = महत्वं

(18) तस्य मात्रा .... अस्ति। (चतुर +टाप्) = चतुरा

(19) .... बालकाः पश्यति। (गम् + शतृ) = गच्छन्तः

(20) .... धावकः मार्गे अपतत्। (धाव् + शृतृ) = धावन्

(21) इदं मधुरं दुग्ध ....। (पा + अनीयर) = पानीयम्

(22) नगरे .... वसति। (जन् +तल्) = जनता

(23) मुनिः पुनरपि विशदी .... अकथयत्। (कृ+शतृ) = कुर्वन्

(24) इदं .... जलं न अस्ति। (समाज + ठक्) = सामाजिकः

(25) मनुष्यः .... प्राणी अस्ति। (समाज + ठक्) = सामाजिकः

(26) .... इयं बालिका। (कुमार+डीप्) = कुमारी

(27) अस्मांक देशे .... स्थानानि सन्ति। (दृश+अनीयर) = दर्शनीयानि

(28) दुष्टाः जनाः .... । (हन्+तव्यत्) = हन्तव्याः

(29) अस्माकं जीवने विषायाः .... वर्तते। (महत्+त्व) = महत्वं

(30) अस्या .... दीपिका अस्ति। (अनुज+टाप्) = अनुजा

(31) तनयः तत्र .... अध्ययने संलग्नः समभूत्। (वस + शत्) = वसन्

(32) आदिश्यतां किं .... । (कृ + अनीयर) = करणीयम्

(33) .... । स्वागतं ते। (श्रेष्ठ + इनि) = श्रेष्ठिन्

शेखावाटी मिशन–100

(34) व्याघ्रं दृष्टवा सा .... । (चिन्तितवत् + ङीप्) = चिन्तितवती।

1. **शतृ प्रकृति प्रत्यय उदाहरण–**

प्रकृति		प्रत्यय		शब्द	पुरूष	स्त्री.	नपु.
पठ्	+	शतृ	=	पठत्	पठन्	पठन्ती	पठत्
अस्	+	शतृ	=	सत्	सन्	सती	सत्
लिख्	+	शतृ	=	लिखत्	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
दृश्	+	शतृ	=	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
गम्	+	शतृ	=	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
नी	+	शतृ	=	नयत्	नयन्	नयन्ती	नयत्
दा	+	शतृ	=	यच्छत्	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
नृत्	+	शतृ	=	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
पृच्छ्	+	शतृ	=	पृच्छत्	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्

2. **शानच् प्रत्यय उदाहरणः–**

प्रकृति		प्रत्यय	पुरूष	स्त्री.	नपु.
सेव्	+	शानच्	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
मुद्	+	शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत्	+	शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
लभ्	+	शानच्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
यज्	+	शानच	यजमानः	यजमाना	यजमानम्

3. **तव्यत्– प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय	पुरूष	स्त्री.	नपु.
कृ	+	तव्यत्	कर्त्तव्यः	कर्तव्या	कर्त्तव्यम्
क्री	+	तव्यत्	क्रेतव्यः	क्रेतव्या	क्रेतव्यम्
दृश्	+	तव्यत्	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्
नम्	+	तव्यत्	नन्तवयः	नन्तव्या	नन्तव्यम्
हन्	+	तव्यत्	हन्तव्यः	हन्तव्या	हन्तव्यम्
श्रु	+	तव्यत्	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्

शेखावाटी मिशन–100

4. **अनीयर–प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय	पुरूष	स्त्री.	नपु.
पठ्	+	अनीयर्	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
दा	+	अनीयर्	दानीयः	दानीया	दानीयम्
कृ	+	अनीयर्	करणीयः	करणीया	करणीयम्
हन्	+	अनीयर्	हननीयः	हननीया	हननीयम्
गम्	+	अनीयर्	गमनीयः	गमनीया	गमनीयम्
पा	+	अनीयर्	पानीयः	पानीया	पानीयम्
श्रु	+	अनीयर्	श्रवणीयः	श्रवणीया	श्रवणीयम्
स्था	+	अनीयर्	स्थानीयः	स्थानीया	स्थानीयम्

5. **क्तिन्–प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय		शब्द
गम्	+	क्तिन्	=	गतिः
नी	+	क्तिन्	=	नीतिः
दृश्	+	क्तिन्	=	दृष्टिः
सृज्	+	क्तिन्	=	सृष्टिः
भज्	+	क्तिन्	=	भक्तिः
भ्रम्	+	क्तिन्	=	भ्रान्तिः
स्था	+	क्तिन्	=	स्थितिः
स्तु	+	क्तिन्	=	स्तुतिः
श्रु	+	क्तिन्	=	श्रुतिः
गै (गा)	+	क्तिन्	=	गतिः

6. **ल्युट् – प्रत्यय उदाहरण**

धातु		प्रत्यय		शब्द
स्मृ	+	ल्युट्	=	स्मरणम्
कृ	+	ल्युट्	=	करणम्
पच्	+	ल्युट्	=	पचनम्
क्रीड्	+	ल्युट्	=	क्रीडनम्

शेखावाटी मिशन–100

स्था	+	ल्युट्	=	स्थानम्

7. **तृच्–प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय		शब्द		पू.
कृ	+	तुच्	=	कर्तृ	=	कर्ता
श्रु	+	तृच्	=	श्रोतृ	=	श्रोता
दा	+	तृच्	=	दातृ	=	दाता
नी	+	तृच्	=	नेतृ	=	नेता
ज्ञा	+	तृच्	=	ज्ञातृ	=	ज्ञाता
रक्ष्	+	तृच्	=	रक्षितृ	=	रक्षिता
सृज्	+	तृच्	=	सृष्टृ	=	सृष्टा

9. **मतुँप प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय		नपु.	पु.	स्त्री
गुण	+	मतुप्	=	गुणवत्	गुणवान्	गुणवती
रूप	+	मतुप्	=	रूपवत्	रूपवान्	रूपवती
ज्ञान	+	मतुप्	=	ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती
श्री	+	मतुप्	=	श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमति
बुद्ध+मतुप्	+	मतुप्	=	बुद्धिमत्	बुद्धिमान	बुद्धिमती
आयुस्	+	मतुप्	=	आयुष्मत्	आयुष्मान्	आयुष्मती

10. **इन प्रत्यय उदाहरण–**

शब्द		इन प्रत्ययः	इनिप्रत्ययान्तः	पु. शब्दरूप
दण्ड	+	इन्	दण्डिन्	दण्डी
बल	+	इन्	बलिन्	बली
गुण	+	इन्	गणिन्	गुणी
सुख	+	इन्	सुखिन्	सुखी

11. **ठन् प्रत्यय उदाहरण**

शब्द		ठन् प्रत्यय	ठन प्रत्यान्त	पु.रूप
धन	+	ठन् (इक)	धनिक	धनिकः
माया	+	ठन् (इक)	मायिक	मायिकः
चर्मन्	+	ठन् (इक)	चर्मिक	चर्मिकः

शेखावाटी मिशन–100

वर्मन्	+	ठन् (इक)	वर्मिक	वर्मिकः

12. त्व तथा तल् प्रत्यय उदाहरण–

शब्द		त्व/तल् प्रत्ययः	त्व प्रत्ययान्तरूपः	तल् प्रत्ययान्तरूप
मनुष्य	+	त्व/तल्	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
गुरु	+	त्व/तल्	गुरुत्वम्	गुरुता
लघु	+	त्व/तल्	लघुत्वम्	लघुता
कृष्ण	+	त्व/तल्	कृष्णत्वम्	कृष्णता
जड़	+	त्व/तल्	जड़त्वम्	जड़ता
कवि	+	त्व/तल्	कवित्वम्	कविता
पटु	+	त्व/तल्	पटुत्वम्	पटुता

13. टाप् प्रत्ययः उदाहरण

शब्द + टाप् प्रत्ययः	टाप्प्रत्ययान्तः शब्दः
अजा + टाप्	अज
ज्येष्ठ + टाप्	ज्येष्ठा
शूद्र + टाप्	शूद्रा
चटक + टाप्	चटका
वत्स + टाप्	वत्सा
मूषक + टाप्	मूषिका
बालक + टाप्	बालिका
साधक + टाप्	साधिका

14. ङीप प्रत्ययः उदाहरण

शब्दः + ङीप् प्रत्ययः		ङीबन्ताः शब्दः
श्रीमतुप् – श्रीमत्	+ ङीप	श्रीमती
बुद्धिमतुप् – बुद्धिमत्	+ ङीप	बुद्धिमती
रूपमतुप् – रुपवत्	+ ङीप	रूपवती
पचन्तृ – पचन्	+ ङीप	पचन्ती
कुमार + ङीप		कुमारी
किशोर + ङीप		किशोरी
अष्टाध्याय + ङीप		अष्टाध्यायी

शेखावाटी मिशन–100

शब्द रूप प्रकरणम्

शब्द रूप प्रकणम्

1. छात्र (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) –छात्रेण
2. छात्र (सप्तमी विभक्तिः बहुवचनम्) – छात्रेषु
3. हरि (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – हरिम्
4. हरि (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) – हरिणा
5. हरि (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) – हरये
6. पितृ (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) – पित्रा
7. गो (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – ग्राम्
8. गो (सप्तमी विभक्तिः बहुवचनम्) – गोषु
9. गुरु (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – गुरुम्
10. गुरु (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) – गुरुणा
11. गुरु (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) – गुरवे
12. नदी (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – नदीम्
13. नदी (पंचमी विभक्तिः एकवचनम्) – नद्याः
14. नदी (सप्तमी विभक्तिः बहुवचनम्) – नदीषु
15. मातृ (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) – मात्रा
16. मातृ (षष्ठी विभक्तिः एकवचनम्) – मातुः
17. धेनु (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – धेनुम्
18. अस्मद् (प्रथमा विभक्तिः एकवचनम्) – अहम्
19. अस्मद् (प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम्) – वयम्
20. अस्मद् (प्रथमा विभक्तिः द्विवचनम्) – आवाम्
21. अस्मद् (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) – मह्यम्
22. अस्मद् (षष्ठी विभक्तिः एकवचनम्) – मम
23. अस्मद् (षष्ठी विभक्तिः बहुवचनम्) – अस्माकम्
24. युष्मद् (प्रथमा विभक्तिः एकवचनम्) – त्वम्
25. युष्मद् (प्रथमा विभक्तिः द्विवचनम्) – युवाम्
26. युष्मद् (प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम्) – यूयम्
27. युष्मद् (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) – तुभ्यम्
28. युष्मद (षष्ठी विभक्तिः एकवचनम्) – तव
29. सर्व पु० (प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम्) – सर्वे
30. सर्व पु. (सप्तमी विभक्तिः बहुवचनम्) – सर्वस्मिन्
31. सर्व पु. (सप्तमी विभक्तिः बहुवचनम्) – सर्वेषु
32. तत् स्त्री. (प्रथमा विभक्तिः एकवचनम्) – सा
33. तत् स्त्री. (पंचमी विभक्तिः एकवचनम्) – तस्याः
34. नदी (तृतीया विभक्तिः एकवचनम्) – नद्याः
35. गुरु (षष्ठी विभक्तिः एकवचनम्) – गुरोः
36. छात्र (चतुर्थी विभक्तिः एकवचनम्) – छात्राय
37. अस्मद (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – माम्
38. युष्मद् (द्वितीया विभक्तिः एकवचनम्) – त्वाम्

धातु रूप प्रकरणम्

धातु रूप प्रकरणम्

1. भू (लट् लकारस्यय प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – भवति
2. भू (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – भवन्ति

शेखावाटी मिशन-100

3. भू (लट् लकारस्यय उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – भवामि
4. भू (लट् लकारस्यय उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – भवामः
5. गम् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – गच्छति
6. गम् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – गच्छन्ति
7. गम् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – गच्छामि
8. गम् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – गच्छामः
9. प्रच्छ् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – पृच्छति
10. प्रच्छ् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – पृच्छामि
11. प्रच्छ् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – पृच्छामः
12. लिख् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – लिखति
14. लिख् (लृट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – लिखामः
15. लिख् (लृट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – लेखिष्यति
16. लिख् (लृट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – लेखिष्यन्ति
17. लिख् (लृट् लकारस्य उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – लेखिष्यामि
18. लिख् (लृट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – लेखिष्यामः
19. लिख् (लोट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – लिखतु
20. भी (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – बिभेति
21. दा (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – ददातिट
22. दा (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – ददति
23. जन् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – जायते
24. कृ (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – करोति
25. कृ (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – कुर्वन्ति
26. कृ (लट् लकारस्य मध्यम पुरुषे द्विवचनं) – कुरुथः
27. कृ (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – करोमि
28. कृ (लोट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – करोतु
29. कृ (लङ् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – अकरोत्
30. कृ (लङ् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – अकुर्वन्
31. क्रीड् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – क्रीडति
32. क्रीड् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – क्रीडन्ति

शेखावाटी मिशन–100

33. क्रीड् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे एकवचनम्) – क्रीडामि

34. क्रीड् (लट् लकारस्य उत्तम पुरुषे बहुवचनम्) – क्रीडामः

35. सेव् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचने) – सेवते

36. सेव् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – सेवन्ते

37. लभ् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे एकवचनम्) – लभते

38. लभ् (लट् लकारस्य प्रथम पुरुषे बहुवचनम्) – लभन्ते

उपसर्ग प्रकरणम्

उपसर्गाः

1. 'अव' उपसर्ग उदाहरण–

(i) अव + नतिः = अवनतिः

(ii) अव + गमनम् = अवगमनम्

(iii) अव + सीदति = अवसीदति

(iv) अव + स्था = अवस्था

(v) अव + क्षेपणम् = अवक्षेपणम्

2. 'अप' उपसर्ग उदाहरण–

(i) अप + हृ = अपहरति

(ii) अप + चारी = अपचारी

(iii) अप + राधः = अपराधः

(iv) अप + ईक्षा = अपेक्षा

(v) अप + कर्ष = अपकर्ष

3. 'निस्' उपसर्ग उदाहरण

(i) निस् + क्रमणम् = निष्क्रमणम्

(ii) निस् + प्राणः = निष्प्राणः

(iii) निस् + चयः = निश्चय

(iv) निस् + चलः = निश्चल

(v) निस् + क्रियः = निष्क्रियः

4. 'निर' उपसर्ग उदाहरण

शेखावाटी मिशन–100

(i) निर् + गमनम् = निर्गमनम्

(ii) निर् + जनम् = निर्जनम्

(iii) निर् + यात = निर्यातः

(iv) निर् + ईक्षणम् = निरीक्षणम्

(v) निर् + गम् = निर्गच्छति

5. 'दुर' उपसर्ग उदाहरण

(i) दुर् + जनः = दुर्जनः

(ii) दुर् + आशा = दुराशा

(iii) दुर् + गः = दुर्गः

(iv) दुर् + व्यवहार = दुर्व्यवहारः

(v) दुर् + दिनम् = दुर्दिनम्

6. 'आङ्'(आ) उपसर्ग उदाहरण

(i) आ + दरः आदरः

(ii) आ + हारः आहरः

(iii) आ + नी आनयति

(iv) आ + पतिः आपति

(v) आ + गम्य आगम्य

7. 'उद्' उपसर्ग उदाहरण

(i) उद् + ज्वल उज्ज्वल

(ii) उद् + तमः उत्तमः

(iii) उद् + तैजकः उतेजकः

(iv) उद् + सुक उत्सुकः

(v) उद् + पतति उत्पतति

8. 'अधि' उपसर्ग उदाहरण

(i) अधि + शेत अधिशेते

(ii) अधि + दैवतम् अधिदैवतम्

(iii) अधि + हरि अधिहरिः

(iv) अधि + स्था अधितिष्ठति

(v) अधि + अक्षः अध्यक्षः

शेखावाटी मिशन–100

अवयव प्रकरणम्

सदृशं त्रिषु लिङ्ेगषु सर्वासु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।।

तीनों लिगों में, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में जो समान ही रहता है। रूप में परिवर्तन नहीं होता वह अव्यय होता हैं।

सामान्य – परिचयम

वाक्ये अव्ययानां प्रयोगः।।

नूनं सः सत्यं वदति ।.

वृक्षस्य उपरि खगाः तिष्ठन्ति।,

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ।

त्वम् एव माता च पिता त्वमेव।

अहं श्वः जयपुरं गमिष्यामि।

वृक्षस्य अधः जनाः सन्ति।

सहसा कदापि कार्याणि न कुर्यात्।

परिश्रमं विना कुत्र साफल्यम्।

पुरा संस्कृतं जनभाषा आसीत।

क्रियां विना नरः अकर्मण्यः भवति।

नीचैः विघ्न भयेन खलु न प्रारभ्यते।

सः उच्चैः अहसत्।

यथा राजा तथा प्रजा भवति।

कदापि असत्यं मा वदतु।

नक्तम् दधि न भुञ्जीत।

सिंहः उच्चैः गर्जति।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि गरीयसी।

सदा सत्यम् एव विजयति।

पुरा संस्कृतं जनभाषा आसीत्।

क्रियां विना ज्ञानं भारः।

न प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते।

पुरा पाटिलिपुत्रनगरे नन्दः नाम राजा आसीत।

ग्रामाद् बहिः उद्यानमस्ति।.

ज्ञानं बिना न मुक्तिः।

यदा मेधाः गर्जन्ति तदा वर्षा भवति।.

अलं क्रोधेन। अलं कलहेन।.

विद्यालये अद्य वार्षिकोत्सवः आस्त।

सदा सत्यम् एव विजयति।

कर्मणा एव नरः पूज्यते।

मह्यम् ईषद् जलं देहि।

धिक् मूर्खम्

पुरा दशरथः नाम राजा आसीत्।

धनं विना जीवनं व्यर्थम्।

यत्र–यत्र धूमः तत्र–तत्र अग्निः।

गजः शनैः शनैः चलति।

ईश्वरः सर्वत्र व्यापकः अस्ति।.

ग्रामात् बहिः नही प्रवहति।

यथा गुरुः तथा शिष्यः।

शशिना सह याति कौमुदी।

अन्तरा त्वां मां हरिः।

नीरीं विना निष्फला लोकयात्रा।

शेखावाटी मिशन–100

प्रवृतिसाराः खलु मादृशां गिरः।

अर्जुनः तूष्णीं बभूव।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

विपदि उच्चैः धैर्यम्।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।

नद्याः जलं नीचैः गच्छति।

भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।

संज्ञाज्ञानम्

151.	एकपञ्चाशदधिकशतम्	401.	एकाधिकचतुः शतम्
503.	त्र्यधिकपञ्चशतम्	600.	षट्शतम्
646.	षट्चत्वारिंशदधिक षट्शतम्	805.	पञ्चाधिकाष्ट शतम्
673.	त्रिसप्तत्य धिकषट शतम्	111.	एकादशाधिकशतम्
125.	पञ्चविंशत्यधिकशतम्	131.	एकत्रिंशदधिकशतम्
501.	एकाधिकपञ्चशतम्	650.	पञ्चाशदधिक षट्शतम्
650.	पञ्चाशताधिक षट्शतम्	775.	पञ्चसप्ततिअधिक सप्तशतम्
840.	चत्वारिंशदधिकाष्ट शतम्	930.	त्रिंशदधिक नवशतम्
965.	पञ्चषष्ट्यधिकनवशतम्	201.	एकाधिकद्विशतम्
331.	एकत्रिंशदधिकत्रिशतम्	445.	पञ्चचत्वारिंशदधिकचतुः शतम्
510.	दशाधिक पञ्चशतम्	620.	विंशत्यधिकषट्शतम्
751.	एकपञ्चाशदधिक सप्तशतम्	200.	द्विशतम्
130.	त्रिंशदधिकशतम्	117.	सप्तदशाधिकैकशतम्
150.	पञ्चाशदधिकशतम्	140.	चत्वारिंशदधिकशतम्
401.	एकाधिकचतुः शतम्	445.	पञ्चचत्वारिंशदधिकचतुः शतम्
180.	अशीत्यधिकै कशतम्	109.	नवाधिकशतम्
159.	एकोनषट्यधिकशतम्	700.	सप्तशतम्
525.	पञ्चविंशत्यधिक पञ्चशतम्	619.	एकोनविंशत्यधिक षट्शतम्
450.	पञ्चाशतधिक चतुः शतम्	521.	एकविंशत्यधिक पञ्चशतम्
106.	षडधिकशतम्	501.	एकाधिक पञ्चशतम्
110.	दशाधिक शतम्	800.	अष्टशतम्

शेखावाटी मिशन–100

800.	अष्टशतम्	885.	पञ्चाशीत्यधिक अष्टशतम्
684.	चतुरशीत्यधिक षट्शतम्	704.	चतुरधिकसप्तशतम्
666.	षट्षष्ट्यधिकषट्शतम्	650.	पञ्चाशतधिक षट्शतम्
775.	पञ्चसप्ततिधिक सप्तशतम्	900.	नवशतम्
999.	एकोनशतमधिक नवशतम्	990.	नवादशधिक नवशतम

प्रार्थना पत्र एवं पत्रम्

भवान् देवगढ़ग्रामवासिन राजेन्द्रं स्वकीयः सखा अंकित प्रति संस्कृतभाषाशिक्षणम् इति विषये अधोलिखितं पत्र मञ्जूषापदसहायता पूरयित्वा लिखतु।

मञ्जूषा – देवगढ़ग्रामः, अस्माकम् इच्छति, रेखा, पृथक पठित्वा प्राप्तम, सुगन्धम्

(i) ....

दिनांकः 18–3–20.......

प्रिये अंकित!

नमस्ते।,

भवते पत्रं (ii) पठितुम् (iii) .... एषा भाषा वैज्ञानिकी संस्कृतम् (iv)............. देशस्य प्रसिद्धा भाषा। भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतं (v) .... कर्तुं तथैव न शक्यते यथा पुष्पेभ्य (iv) ....।

अतः भवता अपि संस्कृतं पठतु एवं च (viii) .... प्रचारं करोतु।

भवत्याः प्रिय सखा

(viii) ....

(i) देवगढ़ग्रामतः (ii) प्राप्तम

(iii) इच्छति (iv) अस्माकं

(v) पृथक (vi) सुगन्धम्

(vii) पठित्वा (viii) राजेन्द्र।

प्रधानाचार्य आवश्यक कार्यवशात् दिनत्रयस्य अवकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखतः।

शेखावाटी मिशन–100

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

राजकीय–उच्चमाध्यामिक विद्यालयः,

भरतपुरस्य।

विषयः दिनत्रयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः,

सविनयं निवेदयामि यत् मम गृहे अत्यावश्यक कार्य वर्तते। अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुं समर्थः नास्मि । प्रार्थना आस्ति यत् 6–8–20........... तः 8–8–20.......... दिनॉक पर्यन्त त्रयदिनस्य अवकाश स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति।

दिनॉकः– 5–8–20.

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य

नाम–गणेश।

कक्षा– दशमी

:प्र:5 भवान् राजकीय–उच्च माध्यमिक विद्यालय – जोधपुरस्य दशमकक्षाया छात्रः अभिषेकः अस्ति। ज्येष्ठभ्रातुः विवाहकारणात् दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना–पत्रं प्रधानाचार्य प्रति लिखत।

सेवायाम्,

श्रीमान्तः प्रधानाचार्य महोदयाः,

राजकीयः उच्च माध्यामिक विद्यालयः

जोधपुरस्य।

विषयः– ज्येष्ठभ्रातु विवाहकारणात् दिनद्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना–पत्रं।

महोदयः,

सविनयं निवेदनम् आस्ति। यत् मम ज्येष्ठभ्रातुः पाणिग्रहण–संस्कारः 17–7–20..... दिनॉक निश्चितः। एतत् कारणात् दिनद्वयं यावद् अहं स्वकक्षायामुपस्थातुं न शक्नोमि।

अतः निवेदनमास्ति यत् 17–7–20........... दिनॉकः तः 18–7–20... दिनॉक पर्यन्तं द्विनद्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य माम अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

सधन्यवादम्। भवदीयः शिष्यः

दिनॉकः– 15–9–20............. नामः– अभिषेक

कक्षा दशमी

प्र:2 परीक्षायाँ सफलतायै स्वमित्रं प्रदीपकुमार प्रगति अधोलिखितमपूर्णं वर्धापन्नपत्र मञ्जूषायां प्रदत्तपदसहायतया पूरयित्वा

शेखावाटी मिशन–100

पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत।

कुशालं, अधिगतवान्, एवमेव, प्रणामं, परीक्षायाम् वर्धापन्नं, सुहृद्वर्य, जयपुरतः,

(i)..............

दिनॉकः–20–01–20...

अभिन्नहृदय (ii) .... ।

सप्रेम नमस्ते।

अत्र (iii) .... पत्रास्तु। अद्यैव तव पत्रं प्राप्तम्। त्वं प्रथम् श्रेण्यां (iv) .... उत्तीर्य योग्यता–सूच्यां प्रथम स्थानम् (v) .... इति पठित्वा हर्षमनुभवामि। तव प्रयासः सर्वथा साधुवादार्हः। मम (vi) .... (बधाई) स्वीकरोतु। आशासे अग्रेऽपि (vii) .... स्तुत्यप्रयासं करिष्यति। स्वपितृभ्यां मम (viii) .... निवेदय।

तव स्निग्धं मित्रम्

आशीषः

(i) जयपुरतः (ii) सहृद्वर्य (iii) कुशलं (iv) परीक्षायाम् (v) अधिगतवान्

(vi) वर्धापन्न (vii) एवमेव (viii) प्रणामं

प्रार्थना–पत्र

प्रः1 भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय–भरतपुरस्य दशम्याः कक्षायाः रमेशः आस्ति। भवान् अतः स्वप्रधानाचार्याय दिनद्वयस्य रूग्णतावकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखतु।

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

भरतपुरम् ।

विषय = दिनद्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः

सविनयं निवेदयामि यत् अद्य अहं शीतज्वरेण पीडिर्तोऽस्मि। अस्मात् कारणात् अहं दिद्वयस्य यावतृ विद्यालये उपास्थातुं न शक्नोमि। अः प्रार्थये यत् दि. 29.12.2025 तः 30.12.2025 पर्यन्त दिनद्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य मामनुगृहीष्यान्ति भवन्तिः।

दिनॉकः 29.12.20.......................

भवदाज्ञाकारी शिष्याः

नाम–सुरेश

शेखावाटी मिशन–100

कक्षा–दशमी

प्र:2 स्वं राकेश मत्वा राजकीय उच्च माध्यामिक विद्यालयस्य भरतपुस्य प्रधानाचार्याय स्थानानारण के प्रमाणपत्रप्राप्त्यर्थम् संस्कृत प्रार्थनापत्रमेकं लिखतु।

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापकमहोदयाः,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः,

भरतपुरम।

विषयः– स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र–प्राप्यर्थम्।

महोदय:

निवेदनस्ति यद् मम पूज्यपितुः स्थानान्तरण बीकानेरनगरे सञ्जातम् अस्मात्कारणात् वयं सर्वेऽपि पारिवारिकजनाः तत्रैव गमिष्यावः। ममापि तैः सह तत्र गमनं निश्चितमेव। अतः सम्प्रति अहमत्र पठितुं असमर्थोऽस्मि।

निवेदनस्ति यद् मम पूज्यपितुः स्थानान्तरण बीकानेरनगरे सञ्जातम् अस्मात्कारणात् वयं सर्वेऽपि पारिवारिकजनाः तत्रैव गमिष्यावः। ममापि तैः सह तत्र गमनं निश्चितमेव। अतः सम्प्रति अहमत्र पठितुं असमर्थोऽस्मि । अतः प्रार्थना अस्ति यन्महयं स्थानान्तरण प्रमाणपत्र प्रदाय अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमनाः। ममः पितुः स्थानानारणस्य राज्यादेशप्रतिलिपिः भवतामवलोकनार्थ संलग्ना अस्ति।

दिनांक– 24 जनवरी 2025

भवदाज्ञाकारी शिष्यः

नाम :–सुरेशः

कक्षाः– दशमी

भवान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय–जयपुरस्य दशमकक्षायाः छात्रः सुरेश अस्ति। स्वस्य प्रधानाचार्याय शुल्कमुक्त्यर्थम् एक प्रार्थनापत्रं लिखतु।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्या महोदया,
राजकिय आदर्श उच्च–माध्यमिक विद्यालय,
जयपुरस्य।

विषयः–शुल्कमुक्त्यर्थं प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः,

निवेदनमस्ति यदहं भवतां विधालये दशम्या कक्षायां पठामि। मम पिता अतीव निर्धनः अतः मम परिवारस्य आर्थिकदशा समीचीना, नास्ति। निर्धनताकारणात् मम पिता मदीयं विद्यालयशुष्क प्रदानार्थं सक्षमो नास्ति, किन्तु मम अध्ययनस्य रुचिः वर्तते। अतः एवं प्रार्थना वर्तते । यन्मम निर्धनतां स्वाध्ययने च रुचिं विलोक्य शिक्षणशुल्कात् सर्वथामुक्तिं प्रदास्यन्ति श्रीमान्तः

दिनांक 15–7–20..............................

भवदाज्ञाकारी शिष्यः

नाम–सुरेश

कक्षा–दशमी

वार्तालाप

वार्तालाप लेखनम

1. मञ्जूषायाः उचितपदैः 'ग्रीष्मावकाश' इति विषये वार्तालाप पूरयत –

[गतमासे, मया, तत्र, अतिरमणीयः, त्वं, अपश्यः, अगच्छम्, कदा]

विजयः – अजय! ग्रीष्मावकाशे (i) .... कुत्र अगच्छः ?

अजयः – विजय! अहं ग्रीष्मावकाशे अरुणाचलप्रदेशम् (ii) ....!

विजयः – अहो (iii) .... सः प्रदेशः।

अजयः – आम्, (iv) .... याकपशुम् अपश्यम्।

विजयः – किं त्वं गोम्पामन्दिरं न (v) .... ?

अजयः – (vi) .... सह मम जननी जनकः च आस्ताम् । वयं सर्वे गोम्पामन्दिरं अगच्छाम ?

विजयः – यूयं (vii) .... ततः आगच्छत ?

अजयः – वयं (vii) .... एव आगच्छाम ।

उत्तरम (i) त्वं, (ii) अगच्छाम् , (iii) अतिरमणीयः, (iv) तत्र,

(v) अपश्यः, (vi) मया, (vii) कदा, (viii) गतमासे

2. मञ्जूषातः उचितानि पदानि गृहीत्वा 'धूम्रपान – निवारणाय' इति विषये गुरुशिषयोः वार्तालापं पूरयत –

[गन्तुम् , अस्य , तुभ्य , धूम्रपानं , स्वास्थ्य , प्रेरणीयाः , मया , दुर्व्यसनस्य]

सोहनं – गुरूवर! अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्राः (i) .... कुर्वन्ति।

गुरुः – वत्स ! धूम्रपान (ii) .... विनाशकमस्ति।

सोहनः – गुरुवर । कोऽस्य (iii) .... निवारणोपायः।

गुरूः – पुत्र ! जन – जागर्तिरेव (iv) .... दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।

सोहनः – गुरुवर ! (v) .... किं करणीयम?

गुरूः – त्वया छात्राः (vi) .... यत् अस्माभिः धूम्रपानं न करणीयम्।

सोहनः – गुरूवर! एवमेव करोमि। अधुना अहं (vii) .... इच्छामि।

गुरूः – वत्स! महत्वपूर्ण विषयोपरि वार्ता कर्तु (viii) .... धन्यवादं ददामि।

उत्तरम् (i) धूम्रपानं (ii) स्वास्थ्य (iii) दुर्व्यसनस्य (iv) अस्य

शेखावाटी मिशन–100

(v) मया (vi) प्रेरणीयाः (vii) गन्तुम् (viii) तुभ्यं

3. मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा पितापुत्रयोः मध्ये योगदिवसविषये वार्तालापं पूरयतु –

[कुर्वन्ति , आगच्छ , जूनमासस्य , कार्यक्रमाः , शक्नोमि , अस्माकम् , योगदिवसे]

पुत्रः – भो पिताः! (i) .... 21 दिनांके कः दिवसः भवति?

पिता – अरे! तस्मिन देने तु (ii) .... भवति।

पुत्रः – योगदिवसे (iii) .... भवन्ति।

पिता – (iv) .... विश्वेजनाः प्रणायामं व्यायामं च कुर्वन्ति।

पुत्रः – योगेन (v) .... स्वास्थ्यं सम्यक् भवति वा?

पिता – आम्। ये योगं (vi) .... ते रूग्णाः न भवन्ति।

पुत्रः – तर्हि अहम् अपि योगं कर्तुं (vii) .... वा?

पिता – किमर्थं न, (viii) .... आवां योगं करवाव।

उत्तर (i) जूनमासस्य (ii) अन्तराष्ट्रिययोगदिवस (iii) कार्यक्रमाः (iv) योगदिवसे

(v) अस्माकं (vi) कुर्वन्ति (vii) शक्नोमि (viii) आगच्छ।

शेखावाटी मिशन–100

छात्राध्यापकयोः वार्तालाप':

4. [संस्कृतस्य , उत्तीर्णः , निवसामि , प्रणमामि , रूचिः , भवान् , गतकक्षायां, अभ्युत्कर्षः]

छात्रः – महोदय ! अहं भवन्तं (i) .... ।

अध्यापकः – भोः छात्र! भवतः नाम किम्?

छात्रः – महोदय! मम नाम (ii) .... अस्ति।

अध्यापकः – (iii) .... कुत्र निवसति?

अभ्युत्कर्षः – अहं अस्मिन्नैव नगरे (iv) .... ।

अध्यापकः – तव पितुः नाम किम्? किञ्च करोति?

अभ्युत्कर्षः – मम पितुः नाम श्री जितेन्द्रकुमारः अस्ति। सः च (v) .... व्याख्यातापदे कार्यं करोति।

अध्यापकः – कस्मिन विषये तव पठने सर्वाधिका (vi) .... अस्ति।

अभ्युत्कर्षः – संस्कतविषये मम सर्वाधिका रूचिः अस्ति।

अध्यापकः – (vii) .... भवान् कस्यां श्रेण्याम् उत्तीर्णः अभवत्?

अभ्युत्कर्षः – गतकक्षायां अहं प्रथम श्रेण्याम् (viii) .... अभवम्।

उत्तर (i) प्रणमामि (ii) अभ्युत्कर्षः (iii) भवान् (iv) निवसामि (v) संस्कृतस्य

(vi) रूचिः (vii) गतकक्षायां (viii) उत्तीर्णः

5. **'शयन, जागरणयोः समयविषये वार्तालापः'**

[रात्रौ , शयनस्य , विलम्बात् , दशवादने , जागरणीयम् , शयनं , समुचितः, करोमि]

अध्यापकः – रमेश! अहा (i) .... कथं आगतोऽसि?

रमेशः – अद्य मया प्रातः सप्तवादने (ii) .... व्यक्तम्।

अध्यापकः – अरे ! भवान् (iii) .... कदा शयनं करोति?

रमेशः – अहं रात्रौ द्वादशवादने शयनं (iv) .... ।

अध्यापकः – भो छात्राः! विलम्बात् न शयनीयम् न च (v) .... ।

छात्राः – महोदय! तर्हि (vi) .... जागरणस्य च कः समयः (vii) ....

अध्यापकः – भो छात्राः ! शयनस्य समयः रात्रौ (viii) .... जागरणस्य च समयः प्रातः पच्वादने अथवा सूर्यादयात् पूर्वमेव समयः समुचितः भवति।

छात्राः – वयम् एवमेव करिष्यामः

उत्तर (i) विलम्बात् (ii) शयनं (iii) रात्रौ (iv) करोमि (v) जागरणीयम्

(vi) शयनस्य (vii) समुचितः (viii) दशवादने

शेखावाटी मिशन–100

चित्र आधारित वर्णन

प्र:1 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया स्वच्छता विषयेः अष्टवाक्यानि स्कृतभाषायां लिखत–

इतस्ततः, अभियानरूपेण, स्वच्छताकार्यक्रमस्यः, स्वस्थाः, सार्वजनिकस्थलानाम्,

रोगाः, स्वच्छताकार्यम्, दायित्वम्, सर्वे जनाः, सर्वत्र

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) इदम् चित्रं स्वच्छताकार्यक्रमस्य वर्तते।

(ii) चित्रे छात्राः अन्ये जनाश्च स्वच्छताकार्यं कुर्वन्ति।

(iii) अद्य सर्वे जनाः अभियानरूपेण स्वच्छताकार्ये संलग्नाः सन्ति।

(iv) ते सार्वजनिकस्थलानां स्वच्छतां कुर्वन्ति। (v) सर्वत्र स्वच्छतायाः अस्माकं दायित्वम् अस्ति। (vi) अवकरपात्रेषु एव अवकरं स्थापनीयम्। (vii) अस्वच्छताकारणाद् बहवः रोगाः भवन्ति। (viii) अस्माभिः सदैव सर्वत्र स्वच्छता करणीया।

प्र:2 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया सड़कसुरक्षाविषये अष्टवाक्यानि संस्कृतभाषायां लिखत–

राजमार्गेषु, चतुष्पथेषु, तीव्रगत्या, असावधानतया, यातायातस्य नियमानाम्, नियन्त्रिताः, सड़कदुर्घटनायाः

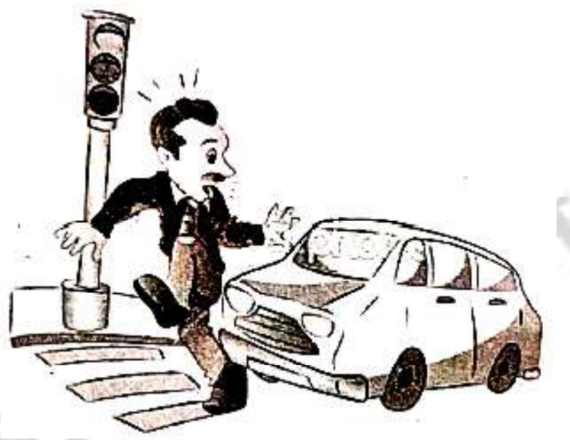

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) इदं चित्रं सड़कदुर्घटनायाः वर्तते। (ii) तीव्रतया वाहनचालनेन दुर्घटना भवति।

(iii) वाहनस्य समुचितनियन्त्रणाभावेन दुर्घटना भवति। (iv) चतुष्पथेषु सावधानतया गन्तव्यम्।

(v) सड़कसुरक्षार्थं यातायातस्य नियमानां पालनं कर्तव्यम्। (vi) वाहनस्य गतिः नियन्त्रिता भवेत्।

(vii) राजमार्गेषु यातायातसंकेतानां पालनं करणीयम्। (viii) चतुष्पथेषु वाहनं तीव्रगत्या न चालयेत्।

प्र:3 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया वाटिकायाः शोभा–विषये अष्टकावाक्यानि संस्कृतभाषायाम् लिखत–

वाटिका, वृक्षे, मन्धः, सायंकालः, चन्द्रः, बालकः, फलानि, लघुपादपाः. आसन्दिका, प्रातः, उत्पतन्ति, खगाः, अधः, पतन्ति, शोभा।

उत्तरम्–वाक्यानि–(i) अस्मिन् चित्रे वाटिका शोभते। (ii) चित्रे सायंकाले चन्द्रः दृश्यते।

(iii) वृक्षे वानरः फलानि खादति।

(iv) वाटिकायां मञ्चः बालकः, बालिका, लघुपादयाः च दृश्यन्ते।

(v) गगने खगाः उत्पतन्ति, फलानि च वृक्षात् अभः पतन्ति।

(vi) वाटिकायाम् एका आसन्दिका वर्तते, यत्र जनाः उपविशन्ति।

(vii) वाटिकायाः शोभा रमणीया वर्तते।

(viii) अत्र जनाः प्रातरू सायंकालञ्च भ्रमणाय आगच्छन्ति।

प्रः4 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया उपवनविषये संस्कृतभाषायाम् लिखत–

उपवनम्, पुष्पाणि, नारी, सूर्यः, खगाः, आकाशे, कलरवम्,

राजमार्गः, बालकः, बालिका, भ्रमन्ति।

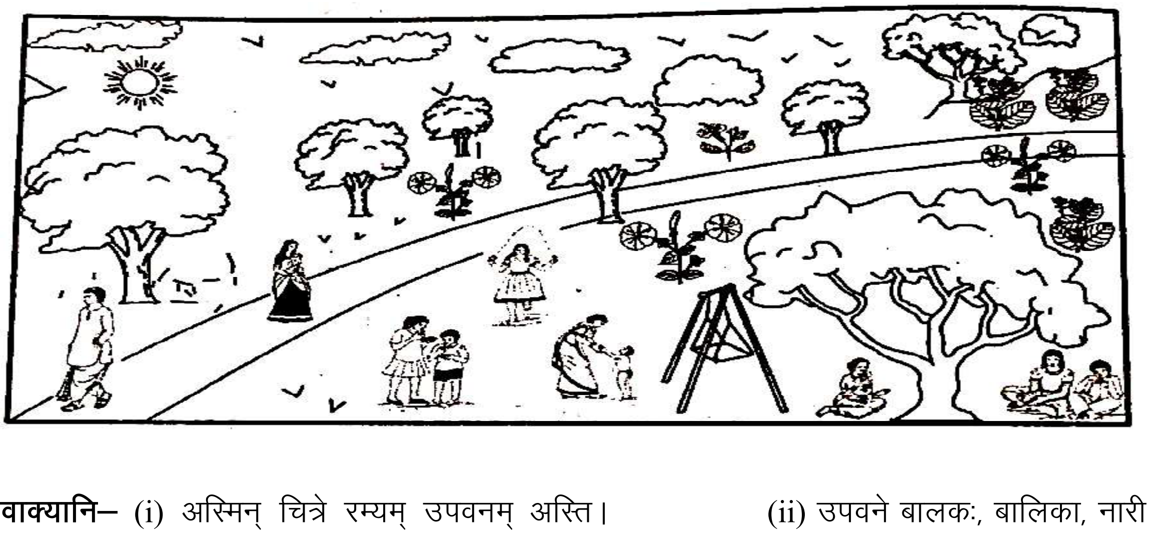

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) अस्मिन् चित्रे रम्यम् उपवनम् अस्ति। (ii) उपवने बालकः, बालिका, नारी च भ्रमन्ति। (iii) आकाशे सूर्यः खगाश्च सन्ति। (iv) अत्र पुष्पाणि अपि सन्ति।

(v) उपवने राजमार्गः अपि दृश्यते। (vi) उपवने बालिकाः दोलाधिरोहणं

शेखावाटी मिशन–100

कुर्वन्ति। (vii) अत्र विविधाः वृक्षाः सन्ति। (viii) अत्र विविधाः खगाः कलरवं।

प्रः5 चित्र दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया 'अस्माकं जीवने वृक्षानाणाम् उपयोगिता' इति ये अष्टवाक्यानि लिखतु।

अस्मिन् युगे, उपयोगिता, प्राणवायुं, पर्यावरणं, दृश्यते, फलानि, प्राप्नुमः, छाया, काष्ठानि, मित्राणि, खगाः, वृक्षाणां, कर्तनं नैव।

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) अस्मिन् युगे सर्वत्र पर्यावरणं प्रदूषितं दृश्यते।

(ii) पर्यावरणस्य शुद्धतायै वृक्षाणाम् उपयोगिता वर्तते।

(iii) वृक्षेभ्यः वयं प्राणवायुं फलानि छाया काष्ठानि च प्राप्नुमः। (iv) खगाः वृक्षेषु आश्रयं प्राप्नुवन्ति।

(v) अस्माकं जीवने वृक्षाणां बहुमहत्त्वं वर्तते। (vi) वृक्षाः एव मानवजीवनस्य प्राणभूताः सन्ति। (vii) वृक्षाणां कर्तनं नैव कर्तव्यम्। (viii) वस्तुतः वृक्षाः अस्माकं मित्राणि

हिन्दी से संस्कृत अनुवाद

हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करना

(1) केशव धीरे–धीरे लिखता है। (2) रमेश ने आज नहीं पढ़ा।

(3) राजा राज्य की रक्षा करता है। (4) हम दोनों पाठशाला जाते है।

(5) तुम सब ईश्वर को प्रणाम करते हैं। (6) वे सब संस्कृत बोलते है।

उत्तरम्ः–

(1) केशवः शनैः शनैः लिखति। **(2) रमेशः अद्य न पठितवान्।**

(3) राजा, राज्यं रक्षति। **(4) आवा पाठशालां गच्छावः।**

(5) यूयम् ईश्वरं प्रणमथ। **(6) ते संस्कृत वदन्ति।**

(7) राधा भोजन पकाती है। (8) गाँव के चारों ओर खेत है।

(9) जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है। (10) हिमालय से गंगा निकलती है।

(11) हम दोनों जल पीते है (12) जल के बिना जीवन सम्भव नहीं हैं।

उत्तरम्ः–

(7) राधां भोजन पचति ।

(8) ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।

(9) जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(10) हिमालयात. गङ्गा निर्गच्छति।

(11) आवां जलं पिबावः।

(12) जलं विना जीवन सम्भवं नास्ति।

(13) माता पुत्र को उपदेश देती है।

(14) गंगा हिमालय से निकलती है।

(15) कृष्ण के चारों ओर बालक है।

(16) विद्या विनम्रता देती है।

उत्तरम्–**(13) माता पुत्राय उपदिशति।**

(14) गङ्गा, हिमालयात, निर्गच्छति।

(15) कृष्णं परितः बालकाः सन्ति।

(16) विद्या ददाति विनयम्।

(17) बालक वेदमन्त्र पढ़ता है

(18) छात्रा कलम से पत्र लिखती है।

(19) मोहन राम के साथ जाता है।

(20) विद्यालय के चारों और खेत है।

(21) रमेश सिंह से डरता है।

(22) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

उत्तरम्–

(17) बालकः बेदमन्त्रं पठति।

(18) छात्रा कलमेन पत्रं लिखति।

(19) मोहनः रामेण सह गच्छति।

(20) विद्यालयं परित क्षेत्राणि सन्ति।

(21) रमेशः सिंहात बिभेति

(22) कवीषु कालिदासः श्रेष्ठः।

(23) अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कुहा।

(24) मुझे फल अच्छे लगते है।

(25) तीन बालिकाएँ इधर देखती है।

(26) कक्ष के बाहर शिक्षक है।

(27) उसके बिना तुम नहीं जाते हो।

(28) उनके साथ सुनीता आई।

उत्तरम्–

(23) अर्जुनः श्रीकृष्णम् अकथयत

(24) मह्यम् फलानि रोचन्ते।

(25) तिस्रः बालिकाः इतः पश्यन्ति।

(26) कक्षात बहिः शिक्षकाः सन्ति।

(25) तं विना त्वम न गच्छसि।

(28) तैः सहं सुनीता आगच्छत्।

(29) तुम भी जाओ।

(30) दस बज गए है।

(31) मैं गणित व विज्ञान पढ़ता हूँ।

(32) मित्र को दूध अच्छा लगता है।

(33) मैं ज्ञानी हूँ।

(34) शिष्य गुरू से निवेदन करता है।

(35) वह प्रकृत्ति से साधु है।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम्–

(29) त्वम् अपि गच्छ।

(30) दशवादनं, जातम्।

(31) अहं गणितं विज्ञानं च पठामि।

(32) मित्राय दुग्धं रोचते।

(33) अहं ज्ञानी अस्मि।

(34) शिष्यः गुरवे निवेदयति।

(35) सः प्रकृत्या साधुः अस्ति।

घटनाक्रम संयोजनम्

प्रः1 अधोलिखितवाक्यानि क्रमराहतानि सन्ति। कथाक्रमं संयोजन कृत्वा लिखत–

(1)

(i) घटे जलम् अल्पम आसीत।

(ii) तस्य मस्तिष्क एकः विचारः समागतः।

(iii) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(iv) सः पाषाण खण्डानि घटे अक्षिपत, जलं च उपरि आगतम्।

(v) सः वने एक घटम अपश्यत्।

(vi) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत।

उत्तरम्–

(i) एकः पिपासितः काकः आसीत।

(ii) सं वने एक घटम् अपश्यत्।

(iii) घटे जलम, अल्पम् आसीत्।

(iv) तस्य मस्तिष्क विचारः समागतः।

(v) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम्।

(vi)जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत।

(2)

(i) मूषकः परिश्रमेण जालम अकृन्तत्।

(ii) एकदा साः जाले, बद्धः।

(iii) सिंहः जालात्, भूत्वाः मुत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(iv) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति एम।

शेखावाटी मिशन–100

(v) सः सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्तः।

(vi) तदा तस्य स्वर श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

उत्तरम्–

(i) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(ii) एकदा सः जाले बद्धः।

(iii) सः सम्पूर्ण प्रथासम अकरोत परं बन्धनात् न मुक्तः।

(iv) तदा तस्य स्वर श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

(v) मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत।

(vi) सिंहः जालात् मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(3)

(i) तदा तस्य मुखस्था रोटिका अपि जले पतति।

(ii) एकदा कश्चित कुक्कुरः एका रोटिकां प्राप्नोत्।

(iii) तदाः सः नदीज ले स्वप्रतिबिम्बम अपश्यत्।

(iv) सः कुक्कुरः रोटिकां प्रासुं तेन सह युदार्थं मुखम् उद्घाटयात।

(v) स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रौटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।

(vi) अत एव कथ्यते .'लोभः न करणीयः।'

उत्तरम्–

(i) एकदा कश्चित् कुक्कुरः रोटिकां प्राप्नोत्।

(ii) तदाः सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।

(iii) रोटिकां प्राप्तुम अचिन्तयत्।

(iv) तदा तस्य प्रासुम् अचिन्यत्।

(v) तदा तस्य मुखस्था रोटिकां अपि जले पतति।

(vi) अत एवं कथ्यते 'लोभः न करणीयः।'

(4)

(i) एकः बुभुक्षितः शृंगालः भोजनार्थं वने, इतस्ततः भ्रमित स्म।

(ii) पर तथापि द्राक्षाफलानि न प्रोपोत्।

(iii) एकस्मिन् स्थाने सः दाक्षालतां पश्यति।

शेखावाटी मिशन–100

(iv) "एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि" इति उक्त्वा कुपितः श्रृंगालः ततः गतः।

(v) तानि खादितं सः नैकवार प्रयासम् अकरोत्।

उत्तरम्–

(i) एकः बुभुक्षितः श्रृंगालः भोजनार्थं वने इतस्ततः भ्रमति स्म।

(ii) एकस्मिन स्थाने सः द्राक्षालतां पश्यति।

(iii) तानि, खादितु सः नैकवार प्रयासम् अकरोत्।

(iv) परं तथापि द्राक्षाफलानि न प्राप्नोत्।

(v) "एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि" इति उकत्वा कुपितः श्रृंगालः ततः गतः।

(5)

(i) सः प्रतिदिनं बहून पशून हत्त्वा खादति स्म।

(ii) एकदा यदा शशकस्थ क्रमः आगतः, तस्य विलम्बागमनेन सिंहः कुपितः जातः।

(iii) सिंहः जले स्वप्रतिबिम्ब दृष्ट्वा तस्मिन कूपे अकूर्दत्।

(iv) कस्मिश्चित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(v) तदा सर्व पशवः विचारं, कृत्वा प्रतिदिन, सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रषयितुं निश्चितवनाः।

(vi) अतः लोके प्रसिद्ध 'प्रसिद्ध बुद्धिर्यस्य बल तस्य' इाति।

उत्तरम्–

(i) कस्मिंश्चित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(ii) सः प्रतिदिनं बहून् प्रशून् हत्त्वा खादति स्म।

(iii) तदा, सर्वे पशवः विचारं कृत्वा प्रतिदिनं सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रेषयितुं मिश्रितवन्।

(iv) एकदा यदा शशकस्य क्रम आगतः तस्य विलंब गमनेन हिंः कूपितः जातः।

(v) सिंहः जलं स्वप्रतिबिम्बं दृष्ट्वा तस्मिन् कूपे अकूर्दत्।

(vi) अतः लोके प्रसिदं 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य' इति।

(6)

अद्योलिखितानि वाक्यानि क्रमरहितानि सान्ति। यथाक्रमं संयोजनं कृत्वा लिखत –

(i) अन्नतः एकस्मिन वटवृक्षात् मूले सः महाबोधम् अलभत्।

(ii) पर सः पूर्णशांतिं न अलभत्।

(iii) महात्मा बुधः एकस्यां रात्रों गृहं त्यक्त्वा निर्गतः।

(iv) एकदा सः पञ्चमित्रैः सह षड्वर्षपर्यन्तम् अतपात्।

शेखावाटी मिशन–100

(v) सः इतस्ततः वने अभ्रमत्।

(vi) तदारभ्यः सः बुद्धनाम्ना प्रख्यात अभवत्।

उत्तरम्–

(i) महात्मा बुधः एकस्यां रात्रौ गृहं व्यक्त्वा निर्गतः।

(ii) सः इतसातः वने अभ्रमत्।

(iii) एकदा सः पञ्चमित्रैः सह षड्वर्षपर्यन्तम् अत्तपत् ।

(iv) परं सः पूर्णशांतिं न अलभत्।

(v) अन्ततः एकस्मिन् वटवृक्षात् मुले सः महाबोधम् अलभत्।

(vi) तदारभ्यः सः बुद्धनाम्ना प्रख्यातः अभवत्।

अनुच्छेद लेखनम्

1. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि "वाटिकायाः शोभाविषये" लिखत–

(जलाशयः, वृक्षाः, पुष्पाणि, भ्रमरा, लताः, पक्षिणः, जनाः, प्रातः काले, भ्रमन्ति, क्रीडन्ति।)

उत्तरम् –

(i) इदं एकायाः वाटिकाया दृश्यम् अस्ति।

(ii) वाटिकायां अनेके वृक्षाः सन्ति।

(iii) अनेका लत्ताः अपि वाटिकायाः शोमा वर्धयान्ति।

(iv) लतासु हरितानि पत्राणि, विविध वर्ण पुष्पाणि च सन्ति।

(v) वृक्षेषु लतासु च पक्षिणः तिष्ठान्ति भ्रमराः पुष्पेणु विचरन्ति गुञ्जन्ति च।

(vi) वाटिकायां जनाः प्रातः काले सांयकाले च भ्रमन्ति क्रीडन्ति च।

2. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि "वाटिकायाः महत्त्वम्" इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– संस्कृतभाषा, संस्कृतिः, सङ्गणकस्य, भाषाजननी, वैदाः, वैज्ञानिकी।)

उत्तरम–

(i) संस्कृत भाषा संसारे प्राचीनत्तमा भाषा अस्ति।

(ii) एषा भाषा भारतस्य संस्कृति वहति।

(iii) संस्कृत भाषा सर्वासां मारतीय भाषाणां जननी अस्ति।

(iv) भारतारय ज्ञान निधिः वेदाः अपि अस्यामेव भाषायाम् विरचित्ता।

(v) एषा वैज्ञानिकी भाषा।

(vi) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् एषा भाषा सङ्णकस्य प्रयोगार्थ सरलतमा भाषा।

3. अधः मन्जूषायां प्रदत्तूशब्दानां सहायताया संस्कृते षड् वाक्यानि 'विद्याधनः' इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– अतिमहत्वं, प्रतिष्ठां, कल्पलता, विद्यार्जनम, धर्माधर्म, सर्वधनं, पशुरेव, अभिलाषाः।)

उत्तरम्–

(i) विद्या धनं सर्वधनं प्रधानमस्ति।

(ii) विद्यया एव मावस्य सवाः अभिलाषाः पूर्यन्ते।

(iii) विद्यया एव धर्माधर्मस्य ज्ञानं भवति।

(iv) अस्मिन् समये विद्यायाः अति महत्वं वर्तते।

(v) विद्या विहीनस्तु मानवः तु साक्षात् पशूरिव वर्तते।

(vi) विद्यया एव मनुष्यः सर्वत्र प्रतिष्ठां प्राप्नोति।

(vii) विद्या वस्तुतः कल्पलतेव विद्यते।

(viii) आतोऽस्माभिः विद्यार्जनम् अवश्यमेव करणीयम्।

4. अधः मम्जूषायां, प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'परोपकारः', इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– संगारे, कल्याणं, दुःखं, पवित्रं, स्वार्थतत्पराः, परेषां, प्रतिष्ठा, परमो।)

उत्तरम्–

(i) संसारे प्राणिनाम् उपकारः परोपकारोऽस्ति।

(ii) परेषां उपकारेः एवं सगुणेः विद्यते येन मनुष्येष्ठ सुखस्य कल्याणं वर्तते।

(iii) परोपकारेण एव हृदयं पवित्रं सरलं सरसं च भवति।

(iv) सत्पुरुषाः कदापि स्वार्थ तत्पराः न भवान्ती।

(v) ते परेषां दुःखं स्वीयं दुःखं मत्वा तन्नाशाय यतन्ते।

(vi) जगतः प्रतिष्ठा परोपकारेणैव भवति।

(vii) अत एव कथ्यते 'परोपकारः' परमोधर्मः।

.5. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'सदाचारः' शति विषये लिखत।

(मञ्जूषा – सदाचारः, सर्वेषाम्, लोके, भूषणम्, कुर्वन्ति, समावेश, जने, अतः)

(i) अस्मिन् लोके सज्जना यथा आचरणं कुर्वन्ति तदवदेव आचरणं सदाचारः।

(ii) सदाचारे सर्वेषां गुणानां समावेशः भवति।

(iii) सुजनता वाक, संयमः विनयः धर्माचरणमिति सद्गुणाः सदाचारशीले जने प्रामुख्येन दृश्यन्ते।

(iv) अतः सदाचारः शीलं वा मानवस्थ परम भूषणं मन्यते।

प्रातः कालः

6. **भ्रमन्ति, क्रीडन्ति, गायन्ति, कूजन्ति, गच्छन्ति, तरन्ति, विचरन्ति, जनाः, खगाः, पशवः, बालाः, यत्र–तत्र, समयः, मनोहरः, उपवनेशु, मार्गेषु, सूर्योदयः, मीनाः**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) प्रातःकालः अतीव मनोहरः भवति।

(ii) प्रातःकाले उपवनेषु जनाः भ्रमन्ति।

(iii) प्रातरूकाले खगाः गायन्ति।

(iv) बालाः उपवनेषु क्रीडन्ति।

(v) प्रातःकाले मार्गेषु पशवः यत्र–तत्र विचरन्ति।

स्वस्थजीवनम्

7. **प्रतिदिनम्, सूर्योदयः, संतुलितः आहारः, नियमितः, व्यायामः, स्वास्थ्यवर्धकः, प्राक्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) स्वस्थजीवनाय प्रतिदिनं व्यायामः करणीयः।

(ii) स्वस्थजीवनाय सूर्योदयात् प्राक् शयनं त्यजनीयम्।

(iii) संतुलितः आहारः स्वास्थ्यवर्धकः भवति।

(iv) स्वस्थजीवनाय नियमितरूपेण भ्रमणं कर्त्तव्यम्।

(v) नियमितः आहारः विहारः च स्वस्थजीवनाय आवश्यकं भवति।

छात्रजीवनम्,

8. **अतीव, उत्तमं, प्रथमसोपानम्, साफल्यं, धनोपार्जम्, देश–सेवा, साक्षरः, परिश्रमेण विद्यार्जनम्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) छात्रजीवनं मानवजीवनस्य प्रथमसोपानम् अस्ति।

(ii) छात्रजीवने परिश्रमेण विद्यार्जनं करणीयम्।

(iii) छात्रजीवने एव छात्रः साक्षरः भवति।

शेखावाटी मिशन–100

(iv) विद्यार्जनं कृत्वा देश–सेवा कर्त्तव्या।

(v) छात्रजीवनस्य सदुपयोगेनैव जीवने साफल्यं प्राप्यते

मम सस्कृत–शिक्षकः

9. **व्यक्तित्वम्, अनुशासनप्रियः, आकर्षकम्, संस्कृत–शिक्षकः, सम्भाषणचतुरः, विनोदप्रियः, मधुरस्वरः, आदर्शः प्रार्थनासभायां, सौम्यं वेषं, परिश्रमी**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) मम संस्कृत–शिक्षकः अनुशासनप्रियः अस्ति।

(ii) तस्य व्यक्तित्वम् आकर्षकम् अस्ति।

(iii) सः संस्कृते सम्भाषणचतुरः विनोदप्रियः च अस्ति।

(iv) सः अतीव परिश्रमी अस्ति।

(v) सः एकः आदर्शः शिक्षकः अस्ति।

शेखावाटी मिशन–100

प्रातः भ्रमणम्

10. **उद्यानम्, बालः, वृक्षाः, पादपाः, जनाः, प्रातःकाले, पुष्पम्, कन्दुकेन, भ्रमणाय, आनन्दाय, स्वास्थ्यम्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) अहं प्रतिदिनं प्रातःकाले भ्रमणाय गच्छामि।

(ii) प्रातःकाले बहवः जनाः भ्रमणाय उद्यानम् आगच्छन्ति।

(iii) प्रातःकाले भ्रमणेन स्वास्थ्यम् उत्तमं भवति।

(iv) प्रातःकाले उद्यानेषु बालाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

(v) प्रातःकाले भ्रमणम् आनन्दाय भवति।

11.शुद्धं पर्यावरणम्

वनस्पतयः, हरिताः, वृक्षाः, प्रकृतेः, प्रदूषणम्, आरोपणीयाः, जलशुद्धिः, नदीजलेषु अवकरः, वर्धमानम्, करणीयम्, क्षेपणीयः, संरक्षणम्

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) मानवजीवनाय शुद्धं पर्यावरणम् आवश्यकम् अस्ति।

(ii) शुद्धपर्यावरणाय प्रकृतेः संरक्षणं करणीयम्।

(iii) नदीजलेषु अवकरः न क्षेपणीयः।

(iv) अस्माभिः वृक्षाः आरोपणीयाः।

(v) प्रदूषणेन बहवः रोगाः भवन्ति।

माध्यमिक परीक्षा, 2025

Secondary Examination, 2025

Model Paper (नमूना प्रश्न–पत्र)

Class - 10th Sub: Sanskrit (संस्कृत)

समयः 03 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः–

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामांकः अनिवार्यतो लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि उत्तरपुस्तिकायामेव लेख्यानि।
4. एकस्य प्रश्नस्य सर्वेषां खण्डानामुत्तराणि एकत्रैव लेख्यानि।
5. सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतमाध्यमेनैव लेखनीयानि।

शेखावाटी मिशन–100

खण्डः "अ"

1. वस्तुनिष्ठप्रश्नाः–

(i) अस्माकं पर्यावरणे किं दूषितं जातम्–

(अ) वायुमण्डलम् (ब) जलम् (स) भक्ष्यपदार्थानि (द) एते सर्वे

(ii) लवकुशयोः वंशस्य कर्ता कः?

(अ) सूर्यः (ब) चन्द्रः (स) गगनम् (द) कोऽपि न

(iii) लोके महतो भयात् कः मुच्यते?

(अ) मूर्खः (ब) बुद्धिमान् (स) बलवान् (द) मायावी

(iv) भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत् ?

(अ) दिल्लीनगरम् (ब) सूरतजनपदं (स) कच्छछजनपदं (द) सीकरजनपदं

(v) नराणां प्रथमः शत्रुः कः?

(अ) क्रोधः (ब) अलस्य (स) प्रेमं (द) उपकारम्

(vi) चातकः के याचते?

(अ) पुरन्दरम् (ब) श्रीकृष्णम् (स) रामम् (द) वरुणम्

(vii) वस्तुतः चौरः कः आसीत् ?

(अ) आरक्षी (ब) अतिथि (स) न्यायाधीशः (द) कोऽपि न

(viii) 'सम्यग्लाभः' इत्यस्य पदस्य सन्धिः भविष्यति–

(अ) 'सम्यक् + लाभः (ब) सम्यग्लाभः (स) समलाभः (द) कोऽपि न

(ix) 'नमस्ते' अत्र का सन्धिः –

(अ) ष्टुत्व (ब) जशत्व (स) सत्व (द) उत्व

(x) 'कविर्गच्छति' इत्यस्य संधि–विच्छेद भविष्यति –

(अ) कविः + गच्छति (ब) कवी+गच्छति (स) कवि+कच्छाति (द) न

(xi) 'राष्ट्रम्' अत्र का सन्धि भविष्यति–

(अ) ष्टुत्व (ब) श्चुत्व (स) जगत्व (द) अनुस्वार

(xii) 'येनाङ्गविकारः' इति सूत्रेण का विभक्तिः भविष्यति–

(अ) प्रथम (ब) द्वितीया (स) तृतीय (द) चतुर्थी

(xiv) 'आवसति' अत्र उपसर्गः भविष्यति–

(अ) वि (ब) आव (स) आ (द) आङ्

(xv) निर्जनम् इत्यत्र उपसर्ग शब्दं पृथक कृत्वा लिखत –

(अ) निस्+जनम् (ब) निर्+जनम् (स) नि+जनम् (द) कोऽपि न

(xvi) लिख् धातोः लृट्–लकारस्य रूपम् अस्ति–

(अ) लेखिष्यति (ब) लिखिष्यति (स) लिखति (द) अलिखत्

(xvii) सिंह सर्वजन्तुन् पृच्छति अत्र का धातुः–

(अ) प्रच्छ्–धातुः (ब) पृष्ट–धातुः (स) पृच्छ्–धातुः (द) प्रच्छ्–धातु

प्रः2 निर्देशानुसार रिक्तस्थानानि पुरयत्– (1x5=5)

(i) गुरवः .... । (वन्द्+अनीयर)

(ii) एक एवं खगो .... वने वसति चातकः। (मान +इनि)

(iii) व्याघ्र दृष्ट्वा सा ....। (चिन्तितवत् +ङीप)

(iv) प्रजासुखे सुख .... प्रजानां चहिते हितम्। (राजन् शब्द षष्ठी वि० एककचन्)

(v) गुरुजनानां सम्मानं .... रोचते। (अस्मद् शब्द चतुर्थी एककचनम्)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:3 कालिदासः मेघदूतं रचितवान्। मेघदूते मानसून विज्ञानस्य अद्भूतम् वर्णनम् अस्ति। मानसूनसमयः आषाढ़ मसात प्रारभते। श्याम मेघान् दृष्टवा सर्वेजनाः प्रसन्ना भवन्ति। मयूराः नृत्यन्ति। मानसूनमेघाः सर्वेषां जीवानां कष्टम्अपहरन्ति मेघानां जलं वनस्पतिभ्यः, पशुपक्षिभ्यः, किं वा सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः जीवन प्रयच्छन्ति। मेघजलैः भूमेः उर्वराशक्तिः वर्धते। क्षेत्राणां सिञ्चनं भवति। गगने यदा कदा इन्द्रधनुः अपि दृश्यते। वायुः षीतलः भवति। शुष्कभूमी वर्षायाः बिन्दवः पतन्ति। भूमेः सुगन्धितं वाश्पं निर्गच्छति कदम्ब पुष्पाणि विकसन्ति। तेशु भ्रमराः गुञ्जन्ति।हरिणा प्रसन्नाः भूत्वा इतस्ततः धावन्ति। चातकाः जल बिन्दून् पिबन्ति। बलाकाः पंक्ति बद्ध्वा आकाषेउड्डीयते।मेघदूते मेघः यक्षस्य सन्देश नयतु इति प्रार्थितः। अतः कालिदासः वायुमार्गस्य ज्ञानवर्धकं वर्णन करोति।

(i) भ्रमराः कुत्र गुञ्जन्ति?

(ii) वर्षाकाले वायुः कीदृशी भवति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत्– (2)

(i) मेघदूते कस्य वर्णनम् अस्ति?

(ग) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकम् लिखत्– (1)

(घ) भाषिक कार्यम् (1+1+1=3)

(i) 'ज्ञानवर्धकम्' इति कस्य विशेषणम् ?

(ii) 'धावन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं?

(iii) 'वारिदानां' इत्यस्य पर्यामपद गघांशात् चित्वा लेखनीयम्।

खण्डः "ब'

प्र:4 रामेण सह सीता वनं गतवती। रेखांकितपदे विभक्ति ततकारणञ्च लिखत्– (2)

प्र:5 अधोलिखितौ संख्यावाचि शब्दो संस्कृते लिखत्– (1+1=2)

(i) 436 (ii) 189

प्र:6 न्यायाधीशः आरक्षिणम् आदेशं दत्तवान्। रेखांकित पदमाधृत्य प्रश्न निर्माण कुरूत्– (2)

प्र:7 अधोनिषित श्लोकस्य हिन्दीभाषायां संप्रसगं भावार्थ लिखत्। (2)

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निर्थकम्।
अश्वचेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः।।,

प्र:8 अधोलिखितस्य श्लोकस्य अन्वये मन्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत्– (2)

कज्जलमलिनं धूम मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला सन्धावति वितरन्ती ध्वानम्।।

शेखावाटी मिशन–100

यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संस्मरणम्।

शुचि पर्यावरणम्।।

अन्वयं–शतशकटीयानं(i)........ धूम भुञ्चति। ध्वानं वितरन्ती (ii) संधावति (iii) .... पंक्तयः अनन्ता हि (iv)............. कठिनम्। (यानानाम्, वाष्पयानमाला, कज्जलमलिनम् संस्मरणम्)

प्र:9 स्वपाठ्यपुस्तकात श्लोकद्वयं लिखात् यद् अस्मिन् प्रश्नपत्रे न स्याता। (1+1=2)

प्र:10 'बुद्धिर्बलवती सदा'' अथवा ''विचित्र साक्षी'' इति पाठसार हिन्दीभाषायां लिखत्– (2)

प्र:11 अधोलिखित गद्यांश पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत्–

"बहून्यपत्यानि मे सन्तीति सत्यम्। तथाप्यहमेतस्मिन् पुत्रे विशिष्य आत्मवेदनामनुभवामि। यतोहि अयमन्येभ्यो दुर्बलः। सर्वेष्वपत्येषु जननीतुल्यवत्सला एवा तथापि दुर्बले सुते मातुः अभ्यधिका कृपा सहजैवा" इति। सुरभिवचन श्रुत्वा भृशं विस्मितस्याखण्डलस्यापि हृदयमद्रवत्। च तामेवमसान्त्वयत्– गच्छ वत्से। सर्वभद्र जायेत।

(क) एकपदेन उत्तरत – (1)

कस्मिन् पुत्रे मातुः कृपा अधिका भवति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत– (2)

सुरभिवचनं श्रुत्या कस्य हृदयमद्रवत् ?

(ग) भाषिक कार्यम्– (1+1=2)

(i) कामधेनु इत्यस्य पर्यायपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत्।

(ii) सर्व भद्र जायेत। वाक्येऽस्मिन् कर्तृपद किं?

अथवा

विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्री तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तर प्रविष्टः। तत्र निहितामेका मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च पर तदानीमेव किञ्चिद् विचित्रमघटत् त। चौरः एवं उच्चैः क्रोशितुमारभत् चौरेन चौरोऽयं–चौरोऽयं इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकम् अतिथिमेव च चौरं मत्वाड भर्त्सयन्।

(क) एकपदेन उत्तरत्– (1)

कस्य पादध्वनिना प्रबुद्धः अतिथिः?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत्– (2)

चौर किं आदाय पलायितः ?

(ग) भाषिक कार्यम्– (1+1=2)

(i) विचित्रा देवगतिः। अत्र विशेषणपद किं ?

(ii) चौरोऽयम् अत्र सर्वनामपद किं?

शेखावाटी मिशन–100

प्र:12 अधोलिखितपद्यांश पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानां उत्तराणि यथा निर्देश लिखत–

मृगा मृगैः सङ्ग मनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः।

मूर्खाश्च मूखैः सुधियः समान–शील–व्यसनेषु सख्यम्

(क) एकूपदेन उत्तरत– (1)

मुर्खाः कैः सह व्रजन्ति?

(ख) पूर्णगक्येन उत्तरत्– (2)

केषु सख्यम्?

(ग) भाषिक कार्यम् – (1+1=2)

(i) सुधियः इत्यस्य विलोमपदं कि?

(ii) गावः इत्यस्य क्रियापदं गद्याशात् चित्वा लिखत् ।

अथवा

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।

तदेबाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः ।।

(क) एकपदेन उत्तरत्– (1)

चितेवाचिच किं भवेत् ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत्– (2)

'समत्वं' इत्यस्य का परिभाषा ?

(ग) भाषिक कार्यम (1+1=2)

(i) 'ऋजुता' इत्यस्य पर्यायपदं श्लोकात् चित्वा लिखत्।

(ii) गद्यांशात् अव्ययपदानि चित्वा लिखत।

प्र.13 अधोलिखितं नाट्यांश पठित्वा एतदाधारित प्रश्नान् उत्तरत्–

रामः अहो उदात्तरम्यः समुदाचारः।

किं नामधेयो भवतोर्गुरुः ?

लवः ननु भगवान् वाल्मीकिः।

रामः केन सम्बन्धेन ?

लवः उपनयनोपदेशेन

रामः अहमत्र भवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छमि।

लवः न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदरिमन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।

(क) एकपदेन उत्तरत– (1)

शेखावाटी मिशन–100

रामः कस्य नामं वेदितुम् इच्छति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत्– (2)

महर्षिः वाल्मीकिः लवकुशयोः गुरुः केन सम्बन्धेन आसन?

(ग) भाषिक कार्यम् (1+1=2)

(i) "न हि जानाम्यस्य नामधेयम्।" अत्र 'जानामि' क्रियापदस्य कर्तृपदं किं?

(ii) "अहमत्र भवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।" अत्र 'अहम्' सर्वनाम पदस्य संज्ञापदं किं भविष्यति?

अथवा

मयूरः अरे वानर! तूष्णी भव कथं त्वं योग्यवनराजपदाय? पश्यतु–पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः, अतः वने निवसन्तं मां वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना। यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यया कर्तुम् शक्नोति।

काकः (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक् ! नृत्यातिरिक्तं तव का विशेषता यत् त्वं वनराज पदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

मयूरः यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य पश्य। मम पिच्छानामपूर्व सौन्दर्यम्। (पिच्छानुद्घाटय नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्। न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः। वन्यजन्तुनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

(क) एकपदेन उत्तरत्–

कस्य शिरसि राजमुकुटमिव शिखा स्थायपति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत्–

मयूरः वन्यजन्तूनां कथं रक्षिष्यसि?

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) अस्मिन् नाटयांशे 'अहिभुक' इत्यस्य पर्यायपदं किं?

(ii) 'वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।' वाक्येऽस्मिन् क्रियापदं किं?

प्रः14 यथानिदेशम् उत्तरत्– (1x3=3)

(क) नवा च इयं ऊढा (समस्तपदं लिखत्)

(ख) पाणिपादम् (समासविग्रहं लिखत्)

(ग) अनुरथम् (समासस्य नाम लिखत्)

प्रः15 मञ्जूषायाः प्रदत्तैः समुचितैः अव्ययपदैः वाक्यानि पूरयत्– (3)

(विना, अद्य, उच्चैः, एव)

(i) विद्यालये .... वार्षिकोत्सवः अस्ति।

(ii) सिंहः .... गर्जति।

(iii) परिश्रमं .... कुत्र साफल्यम्?

प्र:16 भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रूल्याणामाली। दशम्याः कक्षायाः छात्रः दिनेशः अस्ति। भवान् एको आवश्यको कार्य वर्तते। स्वकीय प्रधानाचार्यं प्रति दिनद्वयस्य अवकाशार्थम् एक प्रार्थना–पत्र लिखतु– (4)

अथवा

(मञ्जूषा– द्रष्टुम्, अग्रजेभ्यः, रूपनगरतः, कुशली, मञ्चनम्, राजपाल!, करिष्यामि, उत्साहवर्धनम्।)

किसान छात्रावासः

(i) ....

तिथि 10.10.2012

प्रियमित्र (ii) ....

अत्र सर्वगतं कुशलम् अस्ति। मन्ये भवान् अपि (iii) ....इति । अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवे, 'रमणीया हि सृष्टिरेषा' इति नाटकस्य (iv) ....भविष्यति। अहं तस्मिन् नाटके काकस्य अभिनयं (v) .... । भवान् अवश्यमेव तत् (vi) .... आगच्छतु। मम अपि (vi)............. भविष्यति। सर्वेभ्यः (viii) .... मम प्रणामाञ्जलिः निवेद्यताम् इति।

भवतः मित्रम्

राजवीरः

भवान् राजवीरः। भवतः विद्यालये संस्कृत–नाटकस्य मञ्चनं भविष्यति। तदर्थं स्वमित्रं राजपालं प्रति लिखित निमन्त्रण पत्रं मञ्जूषा पद सहायतया पूरयित्वा पुनः लिखत।

प्र:17 चित्र दृष्ट्वा शब्दसचीसहायतया संस्कृते अष्टवाक्यानि लिखत।

(चित्र को देखकर शब्द–सूची की सहायता से संस्कृत में आठ वाक्य लिखिए।)

(मञ्जूषा :– छात्राः शिक्षका, पुस्तकालयः, तरण तालः, कक्षाः, क्रीडाक्षेत्रं, परितः, उद्यानं, अनुशासनम्, पठन्ति, विद्यालायः, पुस्तकानि, अभ्यासः।)

अथवा

(मञ्जूषा– वार्ता, भोजनं, चिकित्सकः, इच्छामि, सेवार्थ, गृहे, चिकित्सालये, व्याकुला)

मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा अधोलिखितं सख्योः संवाद पूरयत।

रमा– प्रिय सखि लते! किमर्थं (i) .... असि?

लता– मम पिता अतीव रुग्णः। राजकीय (ii) .... प्रवेशितः।

रमा– एवम्! ? किं तव माता (iii)..................... नास्ति।

लता– मम माता अपि, (iv)................. चिकित्सालयं गता।

रमा– तर्हि त्वं मया सह चल। मम गृहे (v)...................... करू।

लता– भोजनं न (vi) .... ।

रमा– श्रृणु मम पिता अपि तस्मिन्नेव चिकित्सालये (vii)................. अस्ति।

लता– अहं चिकित्सालये तेन सह (viii)....................करिष्यामि।

प्रः18 क्रमरहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरूत्–

(i) औषधं खादित्या पुत्रः नीरोगः अभवत्।

(ii) एकस्मिन् ग्रामे एका माता निवसति स्म्।

(iii) माता स्वपुत्र माधवं चिकित्सालयं नीतवती।

(iv) तस्याः माधवः नामतः पुत्रः आसीत्।

(v) चिकित्सकः माधवाय औषधं दत्तवान्।

(vi) एकदा माधवः ज्वरपीडितः अभवत्।

अथवा

अघः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहातया संस्कृते षड्वाक्यानि 'समयस्य सदुपयोगः' विषये लिखत– (6x½=3)

(बहुमूल्यम्, बुद्धिमन्तः मूर्खा, छात्राः, विनष्टं, समयं, सदुपयोगेन, समग्रहानिः, महाक्षतिः, प्रयत्नैः दुर्लभः कर्त्तव्यः)

प्रः18 अधोलिखिलेष वाक्येष केषाञ्चित चतुणां वाक्यानां संस्कृत भाषायां अनुवाद कुरूत्– (1x4=4)

(i) कृष्ण के चारों ओर बालक है।

(ii) माता पुत्र को उपदेश देती है।

(iii) कवियों में कालीदास श्रेष्ठ है।

(iv) राजा घोड़े से गिरा।

(v) वायु के बिना जीवन सम्भव नहीं है।

(vi) वे दोनों बाजार जाते है।

शेखावाटी मिशन–100

माध्यमिक परीक्षा, 2025

Secondary Examination, 2025

Model Paper-2 (नमूना प्रश्न–पत्र)

Class - 10th Sub: Sanskrit (संस्कृत)

समयः 03 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः–

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामांकः अनिवार्यतो लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि उत्तरपुस्तिकायामेव लेख्यानि।
4. एकस्य प्रश्नस्य सर्वेषां खण्डानामुत्तराणि एकत्रैव लेख्यानि।
5. सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतमाध्यमेनैव लेखनीयानि।

खण्डः "अ"

1. वस्तुनिष्ठप्रश्नाः–

(i) सत्वसन्धेः उदाहरणमस्ति–

(अ) अजन्तः (ब) नमस्ते (स) तदत्रैकं (द) अस्मान्नगशत् (1)

(ii) हिमाद्रेश्च इत्यस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति।

(अ) हिमाद्रेः + च (ब) हिमान्द्रिः + च (स) हिमाद्रिः + च (द) हिमाद्रेश + च (1)

(iii) 'शेष' अर्थ विभक्तिः भवति ?

(अ) पंचमी (ब) षष्ठी (स) सप्तमी (द) प्रथमा (1)

(iv) 'अधिकरण' कारके विभक्तिः भवति?

(अ) षष्ठी (ब) सप्तमी (स) द्वितीया (द) प्रथमा (1)

(v) 'निस्' उपसर्ग युक्तं शब्दः कः अस्ति?

(अ) निर्वेदः (ब) निर्धनः (स) नियमः (द) निष्प्राणः (1)

(vi) आङ् उपसर्ग युक्तं पदम् अस्ति?

(अ) अध्येताः (ब) अधिकारः (स) आधारः (द) अवसीदति (1)

(vii) 'नर्तिष्यसि' अत्र कः लकारः–

(अ) लट् (ब) लोट (स) लङ् (द) लृट् (1)

(viii) लिख धातोः विधिलिगङ्लकारस्य रूपम् अस्ति –

(अ) लिखति (ब) लिखसि (स) अलिखत् (द) लिखेत् (1)

(ix) कुत्सित वस्तुमिश्रितं किं जातम्?

(अ) कूपम् (ब) भक्ष्यम् (स) जलम् (द) वायुमण्डलम् (1)

(x) भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कः हसति?

(अ) राजसिंहः (ब) मृगः (स) शृगालः (द) बुद्धिमती (1)

(xi) वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?

(अ) मित्रम् (ब) पिता (स) शिशुजन (द) पुत्रः (1)

(xii) 'जननी तुल्यवत्सला' इति पाठः महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः उद्धृतः?

(अ) विराट (ब) वन (स) कर्ण (द) भीष्म (1)

(xiii) काकः कस्य सन्ततिं पालयति ?

(अ) बकस्य (ब) पिकस्य (स) सिंहस्य (द) चातकस्य (1)

(xiv) कः निकषा मृत शरीरम् आसीत्?

(अ) न्यायालयम् (ब) विद्यालयम् (स) राजमार्गम् (द) देवालयम् (1)

(xv) पिककाकयोः भेदः कदा दृश्यते?

(अ) ग्रीष्मकाले (ब) वसन्तकाले (स) रात्रौ (द) वर्षाकाले (1)

(xvi) 'पण्डितः जनः' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति –

(अ) पण्डितश्चजनः (ब) पण्डिताजनः (स) पण्डितोजनः (द) पण्डितर्जनः (1)

(xvii) रुत्वसन्धेः उदाहरणमस्ति–

(अ) सरस्त्ववि (ब) कश्चिज्जनः (स) यज्जलदः (द) परैर्न (1)

2. निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत –

(i) सा .... गीतं गायति। (कुमार + ङीप्) (1)

(ii) .... संसारे पूज्यते। (गुण + मतुप्) (1)

(iii) लोकहितं मम .... । (कृ + अनीय) (1)

(iv) ....स्वस्ति । (छात्र–शब्दस्य चतुर्थीविभक्ति एकवचनम्) (1)

(v) .... नाम किम् ? (युष्मद् – शब्दस्य षष्ठीविभक्ति एकवचनम्) (1)

3. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

समाजे नियमानां पालनम् अनुशासनं भवति। जीवने अनुशासनस्य विशेषं महत्त्वं भवति। प्रत्येकस्मिन् पदे अनुशासनम् आवश्यकं भवति। अनुशासनं बिना किमपि कार्यं सफलं न भवति। छात्रेभ्यः अनुशासनं व्यवस्थायै परमावश्यकमस्ति। अनुशासितः जनः सर्वेभ्यः प्रियः भवति। सामाजिकव्यवस्थायै अनुशासनमत्यन्तम्।

शेखावाटी मिशन–100

आवश्यकमस्ति। यस्मिन् समाजे अनुशासनं न भवति तत्र सदैव कलहः भवति। शिक्षकस्य अनुशासने छात्राः निरन्तरम् उन्नतिपथे गच्छन्ति। प्रकृति ईश्वरस्थ अनुशासने तिष्ठति। यः नरः पूर्णतया अनुशासनं पालयति सः स्वजीवने सदा सफलः भवति।

(क) एकपदेन उत्तरत– **1x2=2**

(i) जीवने कस्य विशेषं महत्त्वमस्ति ?

(ii) शिक्षकस्य अनुशासने के उन्नतिपथे गच्छन्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **2**

(i) अनुशासनं किं भवति ?

(ख) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षक लिखत। **1**

(घ) भाषिककार्यम्– **1x3=3**

उत्तरम्–

(i) "अनुशासनस्य विशेष महत्वं भवति" इत्यत्र कर्तृपदं लिखत।

(ii) "अनुशासनम् आवश्यकं भवति" इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

(iii) "अप्रिय" इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

खण्डः "ब"

4. राजमार्गम् अभितः वृक्षाः सन्ति। रेखांकित विभक्ति तत्कारणं चलिखत।

5. अद्योनिखितौ संख्यावाचिशब्दौ संस्कृते लिखत– 1+1=2

(i) 225 (ii) 756

6. शतशकटीयानम् कज्जलमलिनं धूम मुञ्चति । रेखांकित पदे प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

7. **अधोलिखितश्लोकस्य हिन्दीभाषायां सप्रसंगं भावार्थं लिखत –**

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो, बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः, करी च सिंहस्य बलं न मूषकः।।

8. **अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं मञ्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत–**

यत् प्रोक्तं येन केनापि तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः।
कर्तुं शक्यो भवेद्येन स विवेक इतीरितः।।

(मञ्जूषा–शक्यो, तत्वार्थ, विवेक, केनापि)

येन (i)...... यत् प्रोक्तम् तस्य (ii)............... निर्णयः येन कर्तुं (iii) .... भवेत् सः (iv)...........इति इंरितः।

शेखावाटी मिशन–100

9. स्वपाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयं लिखत् यद् अस्मिन् प्रश्नपत्रे न स्यात्। 2

10. 'जननी तुल्यवत्सला' इति पाठसारं हिन्दीभाषायां लिखत्। 2

अथवा

'सौहार्द प्रकृतेः शोभा' इति पाठसारं हिन्दीभाषायां लिखत्।

खण्डः "स"

11. अधोलिखित गधांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत–

बकः अरे! अरे! मां विहाय कन्थमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति। अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्न स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि योजना निर्मीय व स्वसनाया विविधपदमलंकुर्वाणै जन्तुभिश्य मिलित्वा रक्षोपायान क्रियान्वितान् कारयिष्यामि, अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

(क) एकपदेन उत्तर लिखत– 1

(i) स्थितप्रज्ञः इव कः ध्यानमग्नः तिष्ठति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तर लिखत– 2

(ii) शीतलजले बकः कः इव तिष्ठति ?

(ग) भाषिककार्यम– 1+1=2

(i) माम् विहाय अत्र माम् इति सर्वनामपदं कस्य संज्ञा शब्दस्य स्थाने कृतम् ?

(ii) 'शीतले जले' इति पदयोः विशेषणपदं विशेष्यपदं लिखत ।

अथवा

फालद्वये विभक्ता भूमिः भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीनिः दुर्वारजलधारानिः महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्त भवनेषु सम्पीडिताः सहस्त्रशोऽन्ये सहायतार्थ करुण करुणं क्रन्दन्ति स्म। हा देव। क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन् शिशयस्तु ईश्वर कृपया एवं द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।

(क) एकपदेन उत्तर लिखत– 1

(i) कति फाले विभक्ता भूमिः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तर लिखत– 2

(i) महाप्लावनदृश्यं कथम् उपस्थितम् ?

(ग) भाषिककार्यम्– 1+1=2

शेखावाटी मिशन–100

(i) 'क्रन्दन्ति स्म' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?

(ii) 'क्षुत्क्षामकुण्ठाः मृतप्रायाः केचन् शिशवः एतेषु पदेषु किं विशेष्यपदम्?

12. अधोलिखितं श्लोक पठित्या एतवाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत–

तोयैरल्यैरपि करुणया भीमभानौ निदाधे,

मालाकार ! व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः।

सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां,

धारासारानपि विकिरता विश्वतों वारिदेन।।

(क) एकपदेन उत्तर लिखत– 1

(i) तरोः पुष्टिः केन कृतः ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत– 2

(i) मालाकारः केन प्रकारेण तरोः पुष्टिं करोति?

(ग) भाषिककार्यम्– 1+1=2

(i) 'व्यरचि' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्ता कः ?

(ii) 'सा किं शक्या जनयितुम्' अत्र 'सा' सर्वनामपदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम् ?

अथवा

दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।

नीतिं युक्तिं समालम्य लीलयैव प्रकुर्वते।।

(क) एकपदेन उत्तरत– 1

(i) दुष्कराणि कर्माणि कः करोति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत– 2

(i) काम् समालम्ब्य प्रकुर्वते ?

(ग) भाषिककार्यम– 1+1=2

(i) "दुष्कराणि कर्माणि" अत्र विशेषणपदं लिखत।

(ii) "क्रीडया" अस्य पर्यायपदं लिखत।

13. अधोलिखित नाटयांश पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत–

लवः – ननु भगवान् वाल्मीकिः

रामः – केन सम्बन्धेन?

लवः – उपनयनोपदेशेन।

रामः – अहमत्रभवतोः जनक नामतो वेदितुमिच्छामि।

लवः – न हि जानाम्यहं तस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।

रामः – अहो माहात्म्यम्।

कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।

रामः – कथ्यताम्।

कुशः – निरनुक्रोशो नाम.................

रामः – वयस्य अपूर्वं खलु नामधेयन्।

विदूषकः – (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति?

कुशः – अम्बा।

विदूषकः – किं कुपिता एवं भणति, उत् प्रकृतिस्था?

कुशः – यद्यावयोर्बालभावजनितं कञ्चिदविनय पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपति निरनुक्रोशस्य पुत्रो मा चापलम् इति।

(क) एकपदेन उत्तर लिखत–

(i) लवः कस्य नामधेय न जानाति ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तर लिखत–

(i) कुशः स्वस्य पितुः किन्नाम कथयति?

(ग) भाषिककार्यम्–

(i) जानाम्यहम् तस्य नामद्येयम् –अत्र 'अहम्' सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्

(ii) न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम 'इत्यत्र अस्मिन्' विशेषणपदस्य विशेष्यपदं किम्?

अथवा

वानरः (सगर्वम) अत एव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीया ।।

मयूरः अरे वानरः। तुष्णी भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखा स्थापयता विधात्रा एवाह पक्षिराजः कृतः अतः वने निवसन्तं मां वनराज रूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना। यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथाकर्तुं क्षमः।

काकः (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक्। नृत्यातिरिक्त का तय विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्य मन्दामहे वयम्।

(क) एकपदेन उत्तर लिखत– 1

(i) "अरे वानर तुष्णी भव" इति कः कथयति ?

शेखावाटी मिशन–100

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत– 2

(i) वानर किं कर्तुं कथयति?

(ग) भाषिककार्यम– 1+1=2

(i) "अत एव कथयामि" अत्र कथयामि क्रियापदस्य कतृ पदं कः ?

(ii) "मम शिरसि" अत्र 'मम' इति सर्वनामपदं करने प्रयुक्तम् ?

14. यथानिर्देशम् उत्तरत् –

(i) दिनं दिनं प्रति (समस्तपदं लिखत)

(ii) घनश्यामः (समास विग्रह पदं लिखत)

(iii) चक्रपाणिः (समास्य नाम लिखत्)

15. मञ्जूषायाः प्रदतैः समुचितैः अव्ययपदैः वाक्यानि पूरयत् – (इतस्ततः बहिः कुत्र, कदा)

(i) विद्यालयात् .... एक देवालयं वर्तते।

(ii) सावित्री त्वं .... गच्छसि।

(iii) कुप्कुराः रात्रौ .... भ्रमन्ति।

शेखावाटी मिशन–100

खण्डः "द"

16. भवान् शासकीय उच्चमाध्यमिक विद्यालय रूल्याणामाली इत्यस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रा मोनिका शर्मा अस्ति। स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्य प्रति शुल्कमुक्तये एकं प्रार्थना–पत्र लिखत।

अथवा

भवान् कृष्णकुमारः। भवतः विद्यालये वार्षिकोत्सवे संस्कृत नाटकस्य मञ्चनम् भविष्यति। तदर्थं स्व मित्रं नागराजः प्रति निमंत्रणपत्रं लिखितं मञ्जूषापद सहायतया लिखत –

(मञ्जूषा – अग्रजेभ्यः, सांभरलेक, कुशली, मञ्चनम्, द्रष्टुम्, नागराज, करिष्यामि, उत्साहवर्धनम्)

रा.उ.मा. विद्यालय सुरसिंहपुरा

....

दिनॉकः 29.12.20......

प्रिय मित्र ....

अत्र सर्वगतं कुशलम् अस्ति। भवान् अपि .... इति। अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवेः 'योगदिवस' इति नाटकस्य .... भविष्यति। अहं तस्मिन् नाटके रामदेवस्य अभिनयं.................. । भवान् अवश्यमेव तत् .... आगच्छतु। मम अपि .... भविष्यति। सर्वेभ्यः ....मम प्रणामाञ्जलिः निवेद्यताम्।

भवतः मित्रम्

कृष्णकुमारः

17. अधः प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्ध्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्ट वाक्यानि 'पर्यावरण प्रदूषणम्' विषये लिखत।

(**मञ्जूषा** – पर्यावरणम्, महानगरमध्ये, वाहनानि, धूमं मुञ्चति, दूषितं, ध्वनि प्रदूषणं, वायुमण्डलं, शुचिः)

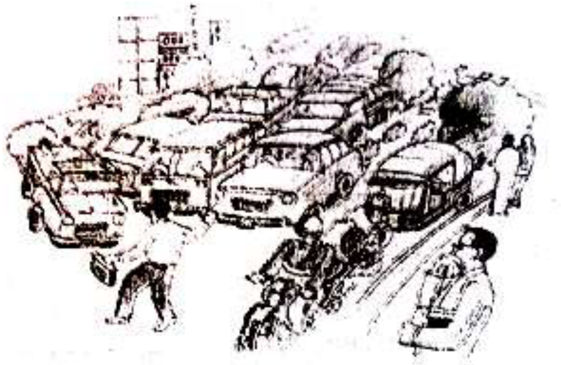

अथवा

मञ्जूषात गृहीत्वा पुत्रस्य अध्ययनविषये पितापुत्रयोः वार्तालापं पूरवतु–

(**मञ्जूषा** – अध्यापकः विषये, गणिते, व्यवस्थां, स्थानान्तरणम्, अध्ययनं, समीचीनं, काठिन्यम्)

पिता – रमेश। तव .... कथं प्रचलति।

रमेश – हे पितः। अध्ययनं तु .... प्रचलति।

पिता – कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन त्वं .... अनुभवसि।

रमेशः – आम!.................................. मम स्थितिः सम्यक नास्ति। यतोहि अस्माकं विद्यालये इदानीं गणितम्य ....नास्ति।

पिता – त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन् .... न उक्तवान्।

रमेशः – पूर्व तु अध्यापक महोदयः आसीत परं एकमासात् पूर्वमेव तस्य .... अन्यत्र अभवत्।

पिता – अस्तु। अहं तव कृते गृहे एवं गणिताध्यापकस्य .... करिष्यामि।

रमेशः – धन्यवादाः।

18. अधोलिखितेषु वाक्येषु केषाञ्चित्पत् वाक्यानां संस्कृत भाषया अनुवाद करोतु – 4

(i) तुम दोनों चित्र देखते हो। (ii) वे सब पाठशाला जायेगे।

(iii) उनके साथ सुनीता आई। (iv) मैं गणित और विज्ञान पढता हूँ।

(v) रमेश शेर से डरता है। (v) नरेन्द्र आँख से अन्धा है।

19. **अधोलिखितानि वाक्यानि क्रमरहितानि सन्ति। यथाक्रमं संयोजनं कृत्वा लिखत –** 3

शेखावाटी मिशन–100

(i) सः वने एकं घटम् अपश्यत्।

(ii) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(iii) घटे जलम् अल्पम् आसीत्।

(iv) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत्।

(v) तस्य मस्तिष्के एकः विचारः समागतः।

(vi) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम्।

अथवा

अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'सदाचारः' इति विषये लिखत–

(**मञ्जूषा –** सदाचारः, सर्वेषाम्, लोके, भूषणम्, कुर्वन्ति, समावेश, जने, अतः)